

जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग
एवं
संस्कृत-प्राकृत विभाग
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित
21 दिवसीय प्राकृत-जैनविद्या शिक्षण कार्यशाला

कार्यक्रम

दिनांक : 02 जुलाई, 2014		11: 30-12 : 30 बजे उद्घाटन समारोह		
	मंगलाचरण		मुमुक्षुवृन्द	
	स्वागत भाषण		कुलसचिव कुलसचिव महोदय	
	कार्यशाला परिचय		प्रो.डॉ. दामोदर शास्त्री	
	मुख्य अतिथि		डॉ. रजनीश शुक्ला	
	सारस्वत अतिथि		प्रो. दयानन्द भार्गव	
	अध्यक्ष		कुलपति महोदया	
	धन्यवाद ज्ञापन		प्रो. समणी चैतन्यप्रज्ञा	
	संयोजन		डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज	
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:00-3:15	व्याख्यान	1.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत भाषा का परिचय
3:30-4:30	व्याख्यान	2.	प्रो. दामोदर शास्त्री	जैन धर्म-दर्शन का सामान्य परिचय
4:30 बजे	पुस्तकालय भ्रमण			
06:30 से	सायं कालीन भोजन (प्रतिदिन)			
03 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	भारतीय दर्शन एवं जैन दर्शन
11:30 से 12:30	व्याख्यान	2.	डॉ. रजनीश शुक्ला	प्राकृत भाषा का वैशिष्ट्य
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:00-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
04 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	भारतीय दर्शन एवं जैन दर्शन
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	डॉ. समणी ऋजुप्रज्ञा	जैन इतिहास एवं संस्कृति
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
05 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.		
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	डॉ. समणी ऋजुप्रज्ञा	जैन इतिहास एवं संस्कृति
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
07 जुलाई, 2014				

10:30 से 12:30	साहित्य सर्वेक्षण लेखन कालांश (पुस्तकालय)			
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
08 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.		
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	समणी रोहितप्रज्ञा	जैन तत्त्व मीमांसा
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
09 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. दामोदर शास्त्री	जैन दर्शन का वैशिष्ट्य
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	समणी रोहितप्रज्ञा	जैन तत्त्व मीमांसा
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
10 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. दामोदर शास्त्री	
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	डॉ. समणी आगमप्रज्ञा	जैन आचार मीमांसा
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
11 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. विश्वनाथ मिश्र	जैन न्याय का परिचय
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	डॉ. समणी आगमप्रज्ञा	जैन आचार मीमांसा
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
12 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. दामोदर शास्त्री	
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	समणी विनयप्रज्ञा	जैन कर्म सिद्धान्त
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
14 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	प्रतिभागियों द्वारा पाठ्यक्रम के आधार पर पावर प्वाइंट प्रिजेंटेशन			
11:30-12:30				
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
15 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. सुदीप कुमार जैन	
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	समणी विनयप्रज्ञा	जैन कर्म एवं योग
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन

10:30 से 12:30	साहित्य सर्वेक्षण लेखन कालांश (पुस्तकालय)			
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
08 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.		
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	समणी रोहितप्रज्ञा	जैन तत्त्व मीमांसा
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
09 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. दामोदर शास्त्री	जैन दर्शन का वैशिष्ट्य
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	समणी रोहितप्रज्ञा	जैन तत्त्व मीमांसा
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
10 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. दामोदर शास्त्री	
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	डॉ. समणी आगमप्रज्ञा	जैन आचार मीमांसा
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
11 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. विश्वनाथ मिश्र	जैन न्याय का परिचय
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	डॉ. समणी आगमप्रज्ञा	जैन आचार मीमांसा
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
12 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. दामोदर शास्त्री	
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	समणी विनयप्रज्ञा	जैन कर्म सिद्धान्त
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
14 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	प्रतिभागियों द्वारा पाठ्यक्रम के आधार पर पावर प्वाइंट प्रिजेंटेशन			
11:30-12:30				
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
15 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. सुदीप कुमार जैन	
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	समणी विनयप्रज्ञा	जैन कर्म एवं योग
12:30 से 01 भोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचास्तिकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन

16 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	डॉ. योगेश कुमार जैन	जैन ज्ञान एवं प्रमाण भीमांसा
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	प्रो. सुदीप कुमार जैन	
12:30 से 01 गोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचारितकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
17 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. समणी चैतन्यप्रज्ञा	अनेकांत नय एवं निक्षेप
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	डॉ. योगेश कुमार जैन	जैन ज्ञान एवं प्रमाण भीमांसा
12:30 से 01 गोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचारितकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
18 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	प्रो. समणी चैतन्यप्रज्ञा	अनेकांत नय एवं निक्षेप
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	प्रो. सुषमा सिंघवी	
12:30 से 01 गोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचारितकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
19 जुलाई, 2014				
10:30 से 11:30	व्याख्यान	1.	डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज	प्राकृत साहित्य का परिचय
11:30-12:30	व्याख्यान	2.	प्रो. समणी चैतन्यप्रज्ञा	अनेकांत नय एवं निक्षेप
12:30 से 01 गोजनावकाश				
2:30-3:15	व्याख्यान	3.	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	प्राकृत व्याकरण
3:30-4:30	व्याख्यान	4.	प्रो. दामोदर शास्त्री	पंचारितकाय मूल ग्रन्थ अध्ययन
21 जुलाई, 2014				
10:30 से 01 00	परीक्षा एवं शोध पत्र प्रस्तुति			

21 जुलाई 2014
समापन समारोह, दोपहर 02:30 बजे

मंगलाचरण	गुमुक्षुवृन्द
स्वागत भाषण	कुलसचिव कुलसचिव महोदय
कार्यशाला कार्यवृत्त	प्रो. समणी चैतन्यप्रज्ञा
मुख्य अतिथि
सारस्वत अतिथि
अध्यक्ष	कुलपति महोदय
धन्यवाद ज्ञापन	प्रो. दामोदर शास्त्री
संयोजन	डॉ. योगेश कुमार जैन

जैनविद्या धर्म एवं दर्शन विभाग एवं संस्कृत एवं प्राकृत विभाग
 जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं
 21 दिवसीय प्राकृत कार्यशाला (1-21 जुलाई, 2014)

Attendance List

S.No.	Student Name	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21
1.	Sh. Aditya Pratap	Aditya	Aditya	Aditya	Aditya	Aditya	Aditya	Aditya	Aditya		Aditya	Aditya	Aditya	Aditya	Aditya	Aditya		
2.	Sh. Abhishek Jain	Abhishek	Abhishek	Abhishek	Abhishek	Abhishek	Abhishek	Abhishek	Abhishek		Abhishek	Abhishek	Abhishek	Abhishek	Abhishek	Abhishek		
3.	MS Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy		Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy	Laxmi Priya Mohanthy		
4.	Sh. Krushna Chandra Panda	OK	OK	OK	OK	OK	OK	OK	OK		OK	OK	OK	OK	OK	OK		
5.	Sh. Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty		DAY	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty	Mrutyunjaya Mohanty		
6.	Ms. Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra		UN	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra	Mushilata Mohapatra		
7.	Sh. Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan		UN	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan	Ranjan Kumar Pradhan		
8.	Sh. Pritam Singh	Pritam Singh	Pritam Singh	Pritam Singh	Pritam Singh	Pritam Singh	Pritam Singh	Pritam Singh	Pritam Singh		UN	Pritam Singh	Pritam Singh	Pritam Singh	Pritam Singh	Pritam Singh		
9.	Sh. Ravi	Ravi	Ravi	Ravi	Ravi	Ravi	Ravi	Ravi	Ravi		UN	Ravi	Ravi	Ravi	Ravi	Ravi		
10.	Sh. Gaware Satish																	
11.	Sh. Nathu Ram																	



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day Training Program on "Ethics in Profession" held on
12/8/2014 at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

VENUE: SEMINAR HALL.

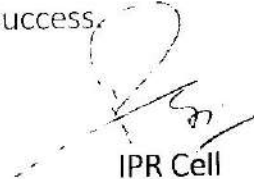
Objective: To have knowledge of Professional ethics and to know about personal and corporate rules that govern behavior within the context of a particular profession.

Resource Person: Prof. K.S. Saxena

Professional ethics is mandatory for professional, which includes their work related to the work place. A person requires to be professional regarding his duties and services. Personal beliefs and relation should be avoided at work place.

Concluding Remarks: Around 70 faculty members of different colleges, research scholars, Ph.D. Holders & in house Faculty members were benefited by the workshop on Professional ethics. The event was grand success.

Total No of Participants: 70


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. Sr. P.A. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC

08/09/2014

अहिंसा एवं शान्ति विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

दिनांक 06.08.2014

सूचना

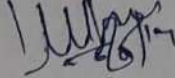
विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शान्ति विभाग द्वारा एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

दिनांक : 08.09.2014

समय : प्रातः 09:00 बजे

स्थान : शैक्षणिक खण्ड सेमीनार हॉल

इस कार्यक्रम में आप सभी सादर आमंत्रित है।


(डॉ. अनिल धर)

विभागाध्यक्ष

प्रतिलिपि :

1. व.नि.स. - कुलपति
2. नि.स. - कुलसचिव
3. वित्ताधिकारी

जैन विश्वभारती संस्थान

(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम १९५६
की धारा ३ के अन्तर्गत घोषित मान्य विश्वविद्यालय)

लाडनून - 341 306 (राजस्थान), भारत



Jain Vishva Bharati Institute

(Declared as Deemed-to-be University under Section 3 of the
UGC Act, 1956)

LADNUN-341306 (Rajasthan), INDIA

Reaccredited 'A' Grade by NAAC

Youth Camp for Training in Non-violence

जैविभासं / अशांवि / 2014 / 26-77

दिनांक: 05.09.2014

प्रतिष्ठा में,

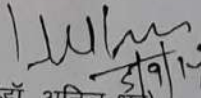
प्राचार्या,
सैनिक सी.सै. विद्यालय,
लाडनून।

प्रिय महोदय,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा दिनांक 08.09.2014 को प्रातः 09.00-12.00 बजे तक अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में आपके विद्यालय के कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

आशा है आप इस कार्यक्रम हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान कर अहिंसा एवं शांति की संस्कृति के विकास में योग्यभूत बनेंगे।

भवदीय,

भवदीय,

(डॉ. अनिल धर)
विभागाध्यक्ष

Office of the Vice Chancellor

Phone: +91-1581-226116

Fax : +91-1581-227472

Email : prajna108@gmail.com

vc@jvbi.ac.in

Website : www.jvbi.ac.in

EPABX : +91-1581-226110,224332

Office of the Registrar

Phone: +91-1581-226230

Fax : +91-1581-227472

Email : registrar@jvbi.ac.in

jvbiadnun@gmail.com



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day workshop on "Intellectual Property Right (IPR)"

Held on 15/9/2014 organized at Jain Vishva Bharti Institute, ladnun

Venue : Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

Event: One day seminar on Intellectual Property Right.

Date: 15 September 2014

Venue: Mahapragya Auditorium

Objective: To have a general understanding of copyright among faculties and learners.

Resource Person: Dr. Anil Dhar

Conclusion / Remarks: In this seminar faculties and students were the beneficiary from different colleges. The event was grand success.

IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. Sr. P.A. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



Department of Jainology and Comparative Religion and Philosophy

Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

National Seminar

Compendium on Science and Mathematics

Oct 4, 2014

Two days national seminar on Compendium on Science and Mathematics was organised in Adhyatma Sadhna Kendra, New Delhi by Department of Jainology and Comparative Religion and Philosophy. The workshop was inaugurated on 02 October 2014 in the presence of Shri Mahashraman, the eleventh Acharya of Terapanth Dharm Sangh and the third Anushasta of Jain Vishwabharati Institute. On this occasion Prof. Ramesh Arora, Member Secretary, University Grants Commission presented the keynote statement. Chief Guest Prof. Kumarapala Desai gave his lecture based on the importance and future prospects of the workshop. The Chancellor of the Institute, Samni Charitra Pragya Ji, while giving information about the various research projects conducted by the institute in the presidential statement, emphasized on research in various subjects. Prof. Samani Chaitanya Pragya Ji presented the outline of the programme and workshop coordinator Dr. Yogesh Kumar Jain thanked all the guests.

The association of 30 eminent scientists, mathematicians and philosophers of the country was received in the workshop. Although this workshop was of national level but at the request of the institute and the department, two educationists from abroad Prof. Kistopher Chapel and Prof. Rudy Jansma also attended this seminar.





JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

Workshop Minutes

Speech & Audio Processing

Date: 12 November 2014

Venue: Seminar Hall, JVBI.

Workshop lead: Ms. Apurva Ghorawat, Asst. Professor, AKKM.

Notes: Prof. Pramila Shanjay

Mrs. Apurva Ghorawat delivered the speech audio processing training programme to faculty members and students of Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

The workshop discussion focused primarily on areas of speech/ audio coding, noise cancelation and speech enhancement. Discussion on limitations was also be exchanged by expert with participants.

Program ended with valedictory function. Dr. Girdhari Lal Sharma presented the vote of thanks.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. Sr. P.A. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

Workshop Minutes

Research Methodology and Statistical Modelling

Date: 1 January 2015

Venue: Seminar Hall, JVBI.

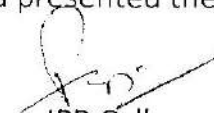
Workshop lead: Ms. Pooja Jain

Notes: Sh. K.K. Modi

The first half of the course was an introduction to multivariate statistical techniques commonly used in linguistics and communications. It was accompanied by lab sessions using the statistical package. The rest of the course revolves around seminar presentations by participants. Presentations primarily concern statistical or methodological issues in the research of the participants.

Topics for the second half include a selection from permutation tests; bootstrapping; analysis of variance and analysis of covariance; regression including multiple regression and hierarchical (multi-level) regression; dimension reduction techniques including factor analysis, principal component analysis, multidimensional scaling and/or latent semantic analysis; analysis of nominal data including association strength, Cohen's kappa, binomial or multinomial models, Fisher's exact test, odds ratios, information-theoretic inspired measures such as point wise mutual information, or logistic regression. Other topics at the request of the participants were also deliberated.

Program ended with valedictory function. Dr. Vikash Sharma presented the vote of thanks.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. Sr. P.A. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



*Department of Jainology and Comparative
Religion and Philosophy*

Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

*National Seminar on "Application of
Anekant in Modern Times"*

12/01/2015

A two-day National Seminar on "Application of Anekant in Modern Times" was organized by the Department of Jainology and Comparative Religion and Philosophy at Kailashsagar Suri Gyan Mandir Koba, Gujarat. In this workshop, training was given mainly on the practical application of the basic principles of Jainism - Anekanth , and the relevance of many theories in the present time. About 150 participants from Gujarat and various states of the country participated in the workshop and received training. The program was directed by Mr. Bajranglal Jain and Prof. Samani Chaitanyapragya . Training was imparted in the workshop through three sessions per day. In the first session, the information about principle views given by Prof. Samani Chaitanyapragya and Prof. Kumarpal Bhai Desai Lectures were conducted. In the second session, information about the practical experiments of Anekant were given through dialogue, videos and memoirs. The doubts of the participants were resolved in the third session.

अहिंसा एवं शान्ति विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

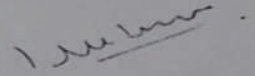
दिनांक : 27.01.2015

सूचना

संस्थान के समस्त विभागाध्यक्षों, शिक्षकों, अधिकारियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 29-31.01.2015 को अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा त्रिदिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसके उद्घाटन सत्र में आप सब की उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

समय - प्रातः 10.30 बजे

स्थान - सेमीनार हॉल (शैक्षणिक खण्ड)



(प्रो. अनिल धर)
विभागाध्यक्ष

प्रतिलिपि-

1. समस्त विभागाध्यक्ष, एवं प्राचार्य, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय
2. निजी सचिव, कुलपति
3. निजी सहायक, कुलसचिव
4. शैक्षणिक अधिकारी (प्रभारी)
5. सूचना पट्ट

Youth Camp for Training in Non-violence, Culture of Peace & Human Rights
(January 29-31, 2015)

जैविभास/अशावि/2015/6535

दिनांक : 28.01.2015

प्रतिष्ठा में,

प्राचार्य,
आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय,
लाडनू।

प्रिय महोदय/महोदया,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अहिंसा एवं शांति एवं प्राच्य विद्याओं को समर्पित जैन विश्वभारती संस्थान का अहिंसा एवं शांति विभाग एवं कैरियर काउन्सेलिंग सेल जनवरी 29-31, 2015 को त्रि-दिवसीय युवा शिविर का आयोजन करने जा रहा है। यह शिविर अहिंसक व्यक्तित्व विकास, शांति की संस्कृति एवं मानवाधिकार को समर्पित होगा।

शिविर में स्नातक एवं स्नातकोत्तर अध्ययनरत विद्यार्थी भाग ले सकेंगे। हम चाहते हैं कि आपके महाविद्यालय से 5 विद्यार्थी इस युवा शिविर में अवश्य भाग लें। शिविर में भाग लेने हेतु कोई पंजीयन शुल्क नहीं है। सभी प्रतिभागियों के आवास व तीन दिन की भोजन व्यवस्था संस्थान द्वारा निःशुल्क की जाएगी। विद्यार्थियों को अपने संस्थान से लाडनू आने व जाने का बस किराया या द्वितीय श्रेणी का वास्तविक रेल भाड़ा संस्थान की ओर से देय होगा। प्रतिभागी विद्यार्थी अपने पहनने, ओढ़ने आदि के वस्त्र साथ में लायें तथा 29 जनवरी, 2015 को प्रातः 09:30 बजे तक अपनी उपस्थिति अनिवार्यतः जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनू में दर्ज करवा दें।

शिविर के अन्तर्गत संभागियों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाएगा। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय है -

सदन की राय में - "आरक्षण की आवश्यकता है"

आपसे अनुरोध है कि अपनी संस्था से संभावित संभागियों एवं प्रतियोगिता हेतु विद्यार्थियों के नाम 24 जनवरी, 2015 तक अवश्य भेजकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें एवं अहिंसा एवं शांति की संस्कृति के विकास में योगभूत बनें। इस सम्बन्ध में कैरियर काउन्सेलिंग सेल के समन्वयक डॉ. जुगल किशोर दाधीच (मो. 09414564043) से सम्पर्क करें।

सधन्यवाद,



(प्रो. अनिल धर)

विभागाध्यक्ष

अहिंसा एवं शांति विभाग

28/1/15 28/1/15



Department of Jainology &
Comparative Religion and Philosophy.
Jain Vishwabharati Institute, Ladnun

National Graduate Conference

"Sampark - 2014"

March 31 to April 01, 2014

The Department of Jainism and Comparative Religion and Philosophy of Jain Vishwabharati Institute organised a seminar dated 31 March and 01 April. A two-day 'Sampark 2014' program was organized on 2014. How to increase the continuous stream of oriental education and get dignified respect? Graduates of Jainvidhya and Sanskrit-Prakrit have been invited to this conference. "SAMPARK 2014" organized the program, the purpose of which is to promote the exchange of Jainism and Sanskrit-Prakrit studying students and scholars, through ideological exchange and also with determining the upcoming programs, to increase the number of students studying in these departments. In this program, along with the graduates from Acharya kalukanya College, the graduates from quota, Banswara, Suratgad Jaswantgadh and Delhi also took part. At this event, essay writing Competition, debate competition and competition on general knowledge about Jain philosophy were also organized. In this event, 25 participants from different colleges of the country participated.





*Department of Jainology &
Comparative Religion and Philosophy.*
Jain Vishwabharati Institute, Ladnun

National Graduate Conference

“Sampark – 2015”

February 23 - 24, 2015

Department of Jainology and Comparative Religion and Philosophy of Jain Vishva Bharati Institute conducted a two days program on February 23 - 24, 2015 organized under the chairmanship of the Vice Chancellor of the institute, Madam Samani Charitra Prajna. In this event, graduates of Jainism and Sanskrit-Prakrit of Rajasthan were invited to this conference. The program was organized to give information about service opportunities which was given by the former student of the department and also by the present working faculty of Sri. Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit School, New Delhi. Dr.Anekant kumar Jain invited as chief speaker. "Sampark 2015" objective was interchange of ideas between students and scholars of Jainology and Sanskrit - Prakrit studies and also for upcoming programs for the promotion of Jainism. In addition to making the determination, it is worthwhile to increase the number of students studying in these departments. The effort was a successful one. In this program, graduates of Kota, Banswara, Suratgarh, Jaswantgarh, Delhi along with the students of the Acharya Kalukanya College also participated. In this event, Essay writing, debate competition and general knowledge competition about Jainism - philosophy. 25 participants from different colleges of the country participated in this SAMPARK program. In this program, information about all the departments of Jain Vishva Bharati Institute was given and guidance of future life to graduates was provided by Prof. Bachhraj Dugadh, Dr. Anand Prakash Tripathi, Dr. Samani Chaitanya prajna, Prof. Damodar Shastri etc. The event was hosted by Dr.Yogesh Jain.



जैन विश्वभारती संस्थान

(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम १९५६
की धारा ३ के अन्तर्गत घोषित मान्य विश्वविद्यालय)

लाडनू - 341 306 (राजस्थान), भारत



Jain Vishva Bharati Institute

(Declared as Deemed-to-be University under Section 3 of the
UGC Act, 1956)

LADNUN-341306 (Rajasthan), INDIA

Reaccredited 'A' Grade by NAAC

शिक्षा विभाग

राष्ट्रीय कार्यशाला (5 से 11 मई, 2015)

“पाठ्यचर्या विकास”

प्रमुख निष्कर्ष

शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान के तत्वावधान में सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला “पाठ्यचर्या विकास” का आयोजन दिनांक 5 से 11 मई, 2015 तक किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ उद्घाटन सत्र में माँ हँसवाहिनी को माल्यार्पण तथा मंगलाचरण के साथ हुआ।

उद्घाटन सत्र में संस्थान के कुलसचिव प्रो. अनिल धर, अध्यक्ष, प्रो. टी. सी. ज्ञानानी, मुख्य अतिथि तथा प्रो. अनिता रस्तोगी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। डॉ. बी. प्रधान ने कार्यशाला के उद्देश्य स्पष्ट करते हुए बताया कि बी. एड. एवं एम. एड. के नवीन पाठ्यचर्या सम्बन्धी तकनीकी एवं व्यावहारिक आयामों पर समालोचनात्मक चिन्तन करना इस कार्यशाला का प्रमुख उद्देश्य है। कार्यशाला की आयोजन समिति में विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन समन्वयक, डॉ. मनीष भटनागर सह समन्वयक तथा डॉ. बी. प्रधान संयोजक के रूप में प्रमुख रहे। अन्य समस्त संकाय सदस्यों ने नवीन पाठ्यक्रम निर्माण में अपना सक्रिय सहयोग दिया तथा आयोजन समिति सम्बन्धी विविध दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया।

सात दिवसीय कार्यशाला के विभिन्न कार्यकारी सत्रों में सम्मानीय प्रो. टी. सी. ज्ञानानी, प्रो. अनिता रस्तोगी, प्रो. अमरिन्दर सिंह बेहरा, प्रो. गोपीनाथ शर्मा, प्रो. अशोक शर्मा, प्रो. अशोक सिडाना, प्रो. सुरेन्द्र सहारण, प्रो. मधुरेश्वर पारीक, श्री अनिल शुक्ला, प्रो. एम. सी. शर्मा, प्रो. दिनेश कुमार, डॉ. सरिता शर्मा, प्रो. विजयलक्ष्मी शर्मा, प्रो. अनिल धर, समणी डॉ. मल्लि प्रज्ञा, समणी आगम प्रज्ञा, डॉ. योगेश जैन विशेषज्ञों के रूप में प्रमुख रहे। कार्यशाला में संकाय सदस्यों सहित लगभग 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र में प्रो. ज्ञानानी ने कुशलतापूर्वक व व्यावहारिक अध्यापक प्रशिक्षण पर बल देने वाली पाठ्यचर्या निर्माण तथा प्रो. रस्तोगी ने विषयवस्तु की सफल क्रियान्विति पर कटिबद्धतापूर्वक कार्य करने की अनुशंसा की। प्रो. धर ने अध्यापकों के मानवीय मूल्य विकास, उत्पादक चिन्तन तथा समग्र विकास पर आधारित गतिविधियों को प्राथमिकता देने पर बल दिया। प्रो. दिनेश कुमार ने विद्यालय अनुभव सम्बन्धी इंटर्नशिप को अधिकाधिक व्यावहारिक एवं क्रियात्मक बनाने का सुझाव दिया। प्रो. एम. सी. शर्मा ने नवीन अध्यापक प्रशिक्षुओं के चिंतनपरकता, सृजनशीलता तथा समस्या समाधान दक्षताओं के अधिकतम विकास को वर्तमान युग की आवश्यकता बताया। उन्होंने भावी अध्यापकों में ‘अकादमिक नेतृत्व’ कौशलों तथा नवाचारी गतिविधियों के विकास सम्बन्धी तत्वों को पाठ्यचर्या में स्थान देने पर बल दिया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने एम. एड. व बी. एड.

की पाठ्यचर्या के फ्रेमवर्क में अंक विभाजन, क्रेडिट सिस्टम तथा प्रायोगिक कार्यों के अंकभार का विवरण प्रस्तुत किया।

कार्यशाला के विविध कार्यकारी सत्रों में संकाय सदस्यों सहित अन्य प्रतिभागियों ने पाठ्यचर्या निर्माण के तकनीकी, संरचनात्मक तथा व्यावहारिक आधारों पर सघन चिन्तन तथा परिचर्चा करते हुए विशेषज्ञों के विविध सुझावों व संशोधनों के आधार पर विषयवस्तु के प्रारूप में आवश्यक परिवर्तन हेतु कार्य किया।

प्रो. अशोक शर्मा ने भावी अध्यापकों के संतुलित मानसिक स्वास्थ्य हेतु नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास संबंधी दैनिक गतिविधियों के आयोजन को सुनिश्चित करने सम्बन्धी विचार रखे। प्रो. अमरेन्द्र सिंह बेहरा ने अध्यापक प्रशिक्षण की समस्त विषय वस्तु के अन्तर्गत सूचना व संप्रेषण तकनीकी सम्बन्धी तत्त्वों को समाविष्ट करने की अनुशंसा की तथा भावी अध्यापकों को वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में सदैव अद्यानूतन (अपडेट) रहने का सुझाव दिया। प्रो. बी. एल. जैन ने संस्थान के मूल उद्देश्यों सम्बन्धी प्रशिक्षण कार्यक्रमों यथा जैन संस्कृति, जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान तथा अहिंसा व शांति शिक्षा को पाठ्यचर्या में शामिल करने का प्रस्ताव रखा।

विषय विशेषज्ञों, संकाय सदस्यों तथा प्रतिभागियों के समीक्षात्मक चिंतन, परिचर्चा तथा अनुशंसाओं के आधार पर निष्कर्षतः

- वैश्वीकरण के परिदृश्य में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के तत्त्वों की कुशलता के साथ-साथ भारतीय मूल्य, संस्कृति तथा समाज के संतुलन में एक अध्यापक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिये।
- पाठ्यचर्या में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षों का संतुलन आवश्यक है जिससे भावी अध्यापक पीढ़ी सृजनशील, क्रियाप्रधान तथा नवाचार सम्पन्न बन सके।
- पाठ्यचर्या में विविध पक्षों की समग्रता पर ध्यान दिया जाना चाहिये, जिससे अध्यापक अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में मूल्य संरक्षण, सामुदायिक विकास तथा संपूर्ण राष्ट्र विकास में अपना योगदान दे सके।
- पाठ्यचर्या में कौशल विकास, यौगिक क्रियाओं सम्बन्धी गतिविधियों के साथ-साथ विद्यालय, परिवार तथा समाज के समन्वय सम्बन्धी सृजनशील कार्यक्रमों को स्थान दिया जाना चाहिये।

A 5-Day Workshop on

"भारतीय अभिलेख एवं पाण्डुलिपि विज्ञान"



A 5-day programme was held from 27-31 July, 2015 on the topic or subject - "भारतीय अभिलेख एवं पाण्डुलिपि विज्ञान"। Chief guest

Professor. Ravindra Kumar, Delhi University had shared special views on it. Prof. Damodar Shastri and Dr. Samant Sangeet Prajna put light on the importance of its knowledge.



श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा

SRI JAIN SWETAMBER TERAPANTHI SABHA

18/19, Muthiah Pillai Lane, MADURAI - 1. E-mail : svpmadurai@gmail.com



President

OM PRAKASH KOTHARI

62, Muthiah Pillai Lane, Manjanakara Street,
Madurai - 625 001. Mob : 98431 50695
E-mail : omkothai.m@gmail.com

Secretary

DHANRAJ LODHA

44, 24, Mahal 4th Street, 1st Floor
Madurai - 625 001. Mob : 94456 31775
E-mail : dhanrajlodha6@gmail.com

Advisor

Nenmal Kothari

M # 94433 50695

Vijaysingh Bhatara

M # 94433 51930

Vice President - I

Mohanlal Golecha

M # 94438 05369

Vice President - II

Vinod Kumar Giya

M # 93444 20981

Joint Secretary

Mohanlal Bothra

M # 93441 06798

Treasurer

Shantilal Burad

M # 93441 06558

Organisation Secretary

Jitendrakumar Golecha

M # 98430 50350

Media Pradhan

Ashok Kumar Jirawala

M # 93441 09302

Executive Member

Poonamchand Fulfagar

Ratanlal Lodha

Rajesh Kumar Bhansali

Rakesh Kumar Parekh

Praveen Kuma Burad

Jitendrakumar Surana

12th Sep 2015

Dr. Samani Bhaskar Pragyaji

Assistant Professor

Dept. of Prakrit and Sanskrit

Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun.

Thanks for valuable lectures on "Theory of Knowledge in Jainism" and "Life Story of Lord Mahaveer" were organized by Terapanth Jain Society at Madurai (Tamilnadu) from 25th August 2015 to 10th September 2015. Our society is benefited by your wide knowledge.

Again thanks and Best Wishes for Bright Future.

Dhanraj

Secretary

SRI JAIN SWETAMBER TERAPANTHI SABHA
18/19, Muthiah Pillai Lane
Manjanakara Street, MADURAI - 625 001



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day workshop on "Innovation in field of Yoga"

Held on 26 August 2015 organized at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun

Event: One day seminar on Innovation in field of Yoga

Venue: Mahapragya Auditorium

Objective: The idea of something "new" or "innovative " in yoga may understandably elicit skepticism among loyal teachers and practitioners.

Resource Person: Dr. P.S. Shekhawat

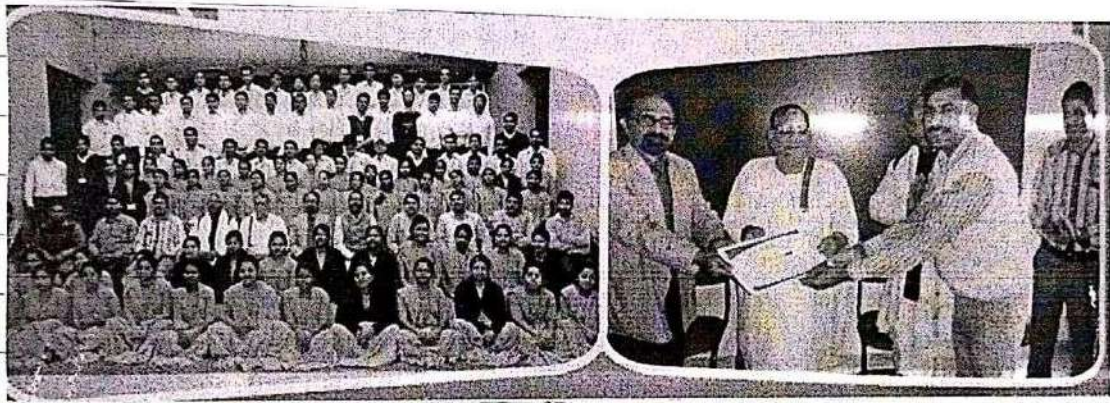
Remarks: Keeping in view the employability in yoga discipline, emphasis was given to blend yoga with different school of meditation. In this seminar, faculties and students were the beneficiary from different colleges. The programme ended with vote of thanks. The event was grand success.

IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. Sr. P.A. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC

A 10-DAY PRAKRIT LEARNING CAMP IN RSS, JAMMU.



"Prakit Learning Camp" was organised in Rashtriya Shiksha Sanstha, Jammu from 23 Nov to 2nd December, 2015. Prof. Damodar Shastri and Dr. Satyanarayan Bharadwaj from the Department of Prakit and Sanskrit, JVB had taught the students prakit. More than 110 students and faculty had actively participated in the camp.

प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

प्राकृत शिक्षण-शिविर
(23 नव. से 02 दिस. 2015)

आयोजन स्थल – राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जम्मू परिसर, जम्मू
प्रतिवेदन

प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग द्वारा 10 दिवसीय (23 नवम्बर से 02 दिसम्बर, 2015) प्राकृत शिक्षण शिविर का आयोजन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, श्री रणवीर परिसर, जम्मू में किया गया। इस शिविर में लगभग 120 प्रशिक्षणार्थियों ने सहभागिता की। इन प्रशिक्षणार्थियों में वहां अध्ययनरत विद्यार्थियों के साथ-साथ प्राध्यापकों ने भी पूर्ण उत्साह के साथ सहभागिता की।

प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ 23 नवम्बर, 2015 को दोपहर 2 बजे से हुआ, जिसके उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के प्राचार्य प्रो. देवनाथन ने की तथा मुख्य अतिथि शिविर के मुख्य प्रशिक्षक प्रो. दामोदर शास्त्री थे। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक मंगलाचरण से हुआ तत्पश्चात् प्रो. दामोदर शास्त्री ने इस शिविर के उद्देश्यों को बताते हुए इसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्राकृत की प्राचीनता, विशालता एवं साहित्यिक दृष्टि से इसके महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने संस्कृत के साथ प्राकृत के अध्ययन पर जोर दिया तथा दोनों भाषाओं को सहोदरा बताया। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. देवनाथन ने संस्कृत एवं प्राकृत दोनों भाषाओं भारतीय संस्कृति के आधार-स्तम्भ के रूप में बताते हुए दोनों भाषाओं की ऐतिहासिकता पर बल दिया। उन्होंने इस शिविर के आयोजन के लिए जैन विश्वभारती संस्थान की कुलपति महोदया समणी चारित्रप्रज्ञाजी का आभार व्यक्त करते हुए मुख्य प्रशिक्षक प्रो. दामोदर शास्त्री एवं सहायक प्रशिक्षक डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज का स्वागत किया।

समापन कार्यक्रम में प्रशिक्षार्थियों में से दो छात्रों विक्रम सिंह एवं मेघमाला ने प्राकृत भाषा में अपने अनुभव व्यक्त किये। दोनों ही छात्रों ने सर्वप्रथम प्राकृत भाषा में अपना परिचय प्रस्तुत किया तत्पश्चात् प्राकृत भाषा के वैशिष्ट्य के साथ-साथ इस प्रकार से शिविरों की आयोजना की आवश्यकताओं पर बल दिया। उन्होंने इस प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से सभी शिविरार्थियों के अत्यधिक लाभान्वित होने की बात स्वीकार की।

मुख्य अतिथि प्रो. दामोदर शास्त्री ने भी प्राकृत की विशेषताओं को बताते हुए इस प्रकार के शिविरों की आयोजना पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार इस दस दिनों की अवधि में कम से कम प्राकृत का एक सामान्य सा परिचय सभी को सिखाया जा सकता है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. भारद्वाज ने अपने विचार व्यक्त करते हुए प्राकृत और संस्कृत दोनों ही भाषाओं को भारतीय धरोहर बताया।

उन्होंने सभी विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों को जैन विश्वभारती संस्थान का भ्रमण करने का निमन्त्रण देते हुए संस्थान के वैशिष्ट्य को जानने एवं प्राकृत भाषा पर आगे अध्ययन एवं शोध कार्य का आह्वान किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष कार्यवाहक प्राचार्य प्रो. शरतचन्द्र शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्कृत-प्राकृत दोनों भाषाओं के वैशिष्ट्य को प्रतिपादित किया तथा बार-बार ऐसे आयोजन होने की आवश्यकता बताते हुए, उन्होंने जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति एवं दोनों प्रशिक्षकों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

इस शिविर के अन्तर्गत प्रतिदिन दो घण्टे की कक्षाएं आयोजित होती थी, जिसमें प्राकृत व्याकरण एवं प्राकृत भाषा की सामान्य विशेषताओं के साथ-साथ उसकी उत्पत्ति, विकास एवं उसकी प्राचीनता के विषय में प्रशिक्षणार्थियों को बताया गया। संस्कृत के समातान्तर ही प्राकृत साहित्य भी प्राप्त होता है। इसका साहित्य भी विशाल एवं साहित्यिक सौन्दर्य को लिए हुए है। प्राकृत की अत्यन्त समृद्ध व्याकरण तथा इसकी अनेक अन्य विशेषताओं पर प्रो. दामोदर शास्त्री ने प्रकाश डाला वहीं समय-समय पर डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने भी प्रशिक्षणार्थियों को प्राकृत की सामान्य विशेषताओं के साथ-साथ साहित्यिक एवं ऐतिहासिक पक्ष पर प्रकाश डाला। PPT के द्वारा एवं पाठ्य-सामग्री वितरण कर प्रशिक्षणार्थियों को अध्ययन करवाया गया जो बड़ा ही रोचक एवं प्रभावक रहा। इन कक्षाओं का आयोजन प्रतिदिन दोपहर 2 से 4 बजे तक रहता था।

2 दिसम्बर, 2015 को दोपहर 12 बजे इस शिविर का समान कार्यक्रम आयोजित किया गया, जो वैदिक मंगलाचरण से प्रारम्भ हुआ, अतिथि प्रशिक्षकों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात् विभागाध्यक्ष प्रो. नगेन्द्र झा ने इस प्रशिक्षण शिविर की उपयोगिता पर बल देते हुए प्राकृत के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने दोनों प्रशिक्षकों (प्रो. दामोदर शास्त्री एवं डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया साथ ही जुलाई माह में एक बार पुनः इस कार्यक्रम की आयोजन का निमन्त्रण भी दिया।

अन्त में शिक्षा विभाग के प्रो. बच्चा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सभी प्रशिक्षणार्थियों को जैन विश्वभारती संस्थान की ओर से प्रमाण-पत्र वितरित किये गये।

इस शिविर में सभी शिविरार्थियों से पंजियन-पत्र भराएं गये तथा अन्त में Feed Back Form द्वारा प्रशिक्षणार्थियों से उनके अनुभव जाने गये। सभी विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने इस कार्यक्रम की सराहना की तथा भविष्य में इस तरह की आयोजना पर बल दिया।

7-1-16

प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

प्राकृत शिक्षण कार्यशाला
(30 नव. से 10 दिस. 2015)

आयोजन स्थल - जैन चेअर ऑफ उत्कल विश्वविद्यालय

प्रतिवेदन

प्राच्य विद्या एवं भाषा विभाग और Jain chair of Uttkal University of Culture के संयुक्त तत्वावधान में दस दिवसीय (30 नवम्बर-10 दिसम्बर) प्राकृत शिक्षण कार्यशाला, भुवनेश्वर में आयोजित हुई। डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा और समणी सम्यक्त्व प्रज्ञा के निर्देशन में समायोजित यह कार्यशाला Jain chair of Uttkal University, P.G. Department of Sanskrit, Uttkal University और Rajdhani College इन तीन स्थानों पर अलग-अलग रखी गई।

Jain chair of Uttkal University of Culture में यह कार्यशाला 4 Dec.-10 Dec. तक प्रातः 9:00-10:00 बजे तक रखी गई जिसमें 10 शोधार्थियों एवं छात्र-छात्राओं ने इसमें भाग लिया।

राजधानी कॉलेज में यह कार्यशाला 2 दिसम्बर-8 दिसम्बर तक प्रातः 10:30-11:30 बजे तक आयोजित हुई जिसमें संस्कृत के अध्यापक-अध्यापिकाओं सहित 78 छात्र-छात्राएं अत्यन्त उत्साह के साथ इसमें सहभागी बनें।

उत्कल विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के 20 शोधार्थियों एवं विद्यार्थी वर्ग ने इसमें भाग लिया। यह कार्यशाला 1 दिसम्बर-9 दिसम्बर तक प्रातः 2:30-3:30 बजे तक रखी गई।

इस प्रकार शिविर में लगभग 100 से अधिक संभागी उपस्थित हुए। डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने प्राकृत भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उसके इतिहास और प्राकृत भाषा का उड़िया भाषा पर कितना प्रभाव है, इन सभी तथ्यों को हिन्दी एवं उनकी मातृभाषा 'उड़िया' के द्वारा बहुत ही

सरल भाषा में समझाया। समणी सम्यक्त्व प्रज्ञा ने प्राकृत भाषा के सामान्य नियमों से अवगत करवाया।

कार्यशाला के अलावा Jain Chair of Uttkal University of Culture एवं संगीत महाविद्यालय में "प्राकृत भाषा एवं जैन धर्म" पर वक्तव्य रखा गया। डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने उड़िया भाषा में विषय का प्रतिपादन किया जिससे 200 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

अणुव्रत समिति, भुवनेश्वर द्वारा हिन्दी अनुज वाचनालय में प्राकृत और उड़िया भाषा विषय पर संगोष्ठी रखी गई जिसमें हिन्दी भाषा से जुड़े हुए विद्वत्वर्ग उपस्थित थे।

कार्यक्रम का समापन समारोह नवनिर्मित तेरापंथ भवन में रखा गया। Jain Chair of Uttkal University of Culture के कुलसचिव प्रो. सुमन दास इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में उत्कल विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुभाष दास, राजधानी कॉलेज की प्राचार्या, तेरापंथ सभा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष तथा महिला मण्डल के पदाधिकारी उपस्थित थे। प्रशिक्षार्थियों ने वक्तव्य एवं गीतिका के माध्यम से अपने अनुभव व्यक्त किए। डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने उपस्थित जन-समूह को प्राकृत भाषा की उपयोगिता, और उसके पठन प्रक्रिया से जुड़ने की ओर प्रेरित किया। इस प्रकार तीन अलग-अलग स्थानों पर आयोजित होने वाली यह कार्यशाला पूर्ण सफल रही। कार्यशाला की संचालिका प्रो. सुचित्रादास, अध्यक्ष, जैन चेअर, ने कार्यक्रम में संभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए तथा जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा के प्रति आभार ज्ञापन करते हुए कार्यशाला को पुनः ग्रीष्मावकाश में आयोजित करने की इच्छा व्यक्त की।

कार्यशाला की सफलतम आयोजना में तेरापंथ संभा, भुवनेश्वर एवं अणुव्रत समिति के अध्यक्ष-मंत्री सहित सम्पूर्ण तेरापंथ समाज का सहयोग सराहनीय रहा।

प्रतिनिधि प्रमाणपत्र

① श्री (नि.प.) (१६/१४) - उ.म.स. वि. वि.

② श्री (नि.प.) (१६/१४) - उ.म.स. वि. वि.

Sangar

A 10 DAY PRAKRIT LEARNING CAMP IN BHUBANESHWAR.



"Prakit Learning Camp" was organised in Utkal University, Bhubaneswar from 30 Nov to 10 Dec, 2015. Dr. Samant Sangeet Prajna and Samant Sanjyaktva Prajna, Assistant Professor taught the students Prakit. More than 30 students and faculty had actively participated in it.

International Conference on Science and Jain Philosophy



Organised by

Bhagwan Mahavira International Research Center,
Jain Visva Bharati Institute



In collaboration with IIT, Bombay and University of Mumbai

Jan 8-10, 2016

The International Conference on Science and Jain Philosophy was organized by Bhagawan Mahavira International Research Center (BMIRC), Deptt of Jainology and Comparative Religion and Philosophy, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun, Rajasthan during Jan.8-10, 2016 at Indian Institute of Technology Bombay, Powai, Mumbai. Prof. Samani Chaitanya Prajna, Head JCRP, was the Director General of the conference. Prof. Muni Mahendra Kumar was the Spiritual Guide, Prof. N.L. Kachhara, Prof. Narendra Bhandari and Prof. K.P. Mishra, Former VC of NGBU, Allahbad, were the Executive Directors of the conference. The conference has got a big response from all over the world.

The major objective of the Conference was focused to comprehend the jain doctrines and practices in the light of modern scientific theories and laws and to utilize this comprehensive knowledge for the welfare of mankind .The COLLABORATORS were Indian Institute of Technology Bombay, University of Mumbai and KJ.Somaiya Center for Studies on Jainism .A total of about 850 delegates attended. More than 20 scientists, philosophers and spiritual masters from about 17 countries delivered their talks. About 30 Vice Chancellors, Directors and other distinguished delegates from India delivered their talks.



International Conference on Science and Jain Philosophy

Jan 8-10, 2016



The Conference was inaugurated by Mr Justice Dalveer Bhandari, a former Judge of Supreme Court of India and presently a Justice in the International Court of Justice, Hague, The Netherlands. Hon'ble Dr Harshvardhan ji, Minister for Science and Technology was the Chief Guest and Hon'ble Shri Shripad Naik, Minister of AYUSH and Health & Family Planning, Govt of India was the Guest of Honor. HH Rev Dalai Lama, Nobel Laureate was unable attend due to health issue but the Secretary of HH Dalai Lama Foundation, New Delhi, Mr Rajiv Mehrotra graced the occasion. Prof KP Mishra, Director and Chairman ,ICSJP briefed about the scope and plans of conference. About 850 delegates and guests attended the conference. More than 30 Vice Chancellors of Universities and Directors of Institutes from India delivered their invited talks. More than 20 scientists and philosophers from about 17 countries of overseas attended and delivered their talks in the conference. Prof D.Parthasarthy, HOD, IIT Bombay welcomed the delegates. Shri BR Bhandari, Chancellor , JVBI presided. Respected Munishri Mahendra Kumar ji graced the dias and addressed the audience. Samani Charitra, VC, JVBI and Dr Samani Chaitnya Pragya , Executive Director of BMIRC addressed the august audience.



The conference was comprised of 9 scientific sessions spread in 3 days, namely, Science and Spirituality, Environment and Ecology, Laws of Nature and Karma Theory, Relativism and Jain Logic, Jain mathematics and its Importance, Soul and consciousness.

- Each Sessions was planned with a Plenary Talk followed by Invited talks and short talks.
- There were organized 2 Panel Discussions chaired by a distinguished scientist/philosopher and panelists drawn from science, philosophy and spirituality were invited.
- A Round Table session was organized with theme Developing scientific cum spiritual techniques for inculcation of moral values and development of EQ in global education curriculum.
- Young Researcher Session was organized to give an opportunity to young minds to articulate their thoughts and opinions on the theme of the conference.
- Poster Session was organized for presentation of papers and interaction with peers and scientists/specialist.
- An Experimental Workshop was held on impact of life style interventions, preksha meditation and yoga in achieving holistic health.

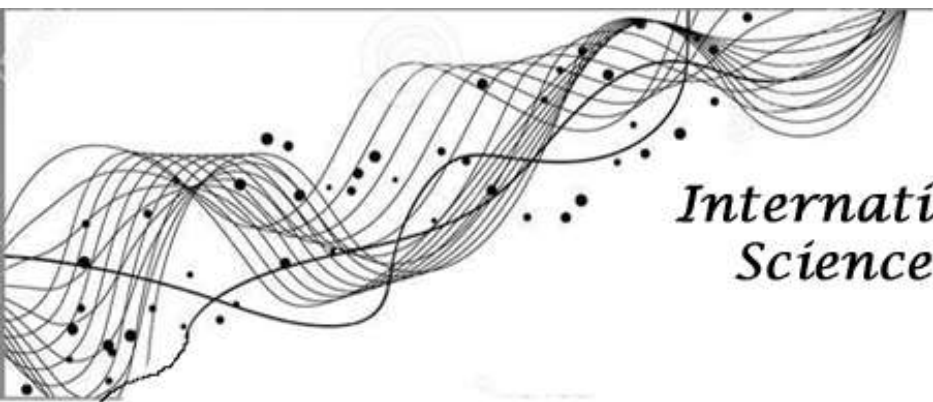
International Conference on Science and Jain Philosophy

Jan 8-10, 2016

The Valedictory function was graced by Mr Justice Adarsh Goel of Supreme Court of India as Chief Guest and Mr Anurag Batra, Chairman, Business World and Mr Justice Jasraj Chopra (Retd) of Rajasthan High Court and esteemed Spiritual Leader, Munishri Mahendra Kumar ji graced the dias and addressed the delegates. Rev.Muni Nandigoshri graced as Special Guest. The respected Chancellor, JVB University, Shri BR Bhandari ji presided the function. Prof K. P. Mishra, Director, ICSJP presented his views on research and administration of BMIRC. Dr Samani Chaitnya Prgya ji welcomed the guests. Dr N.Bhandari of PRL gave a highlight of the conference.

A notable feature of the conference was technology based presentations including some talks on SKYPE from overseas and India.. Entire presentations and discussions of the conference have been recorded. A common viewpoint emerged that understanding of spirituality by employing the scientific methods and tools is timely and important. Scientists from West brought out the lack of information on Jainism compared to Buddhism and OSHO. It was felt that essentials of Jain preachings and traditions should be effectively communicated to western philosophers and scientists. The scientific aspects of Jain philosophy needs to be researched and presented to world. The concepts of soul and consciousness were discussed in the light of modern knowledge and deeper research should be encouraged. A notable aspect was eagerness of young scholars and others to know more about scientific basis of Jain philosophy and doctrines. There were several notable papers and demonstrations on life style practices and their impact on holistic health. The question of ahimsa,anekantvad,preksha meditation were discussed in terms of modern physics. Biological aspects of consciousness and soul appear to draw attention of many scientists and spiritual leaders. Time constrain of speakers was a common concern which was acceptable due to more than expected general registration and invited speakers.





International Conference on Science and Jain Philosophy

Jan 8-10, 2016

Delegates were given opportunity to express their views on relevant issues of Jainism and science. They were also given feed back form for evaluation of quality and future course. It turned out that expectations were high for starting appropriate research projects on science and spirituality in the context of jain philosophy at Bhagwan Mahavira International Research Center. It was suggested that BMIRC should be developed into a world class Research Center engaging best minds and talented scholars by granting fellowship.. A Ph. D. research program should be designed and implemented.. In view of possible collaborations with reputed Institutionslike, TIFR, MU, IIT Bombay, BARC, NEERI,ICMR Laboratory, Institute of Reproduction and many others in Mumbai, it was suggested to establish BMIRC in or around Mumbai.and some other metropolitan cities to effectively disseminate the message of jainism on the basis of philosophy and modern science. In modern society Jain preachings of non-violence and ahimsa have torch bearing roles to help steer mankind in right direction.It was suggested that such conferences should be organized every 2-3 years.Many youths proposed that conferences should be organized for young jain students and scholars. Intellectual consensus was to bresent principles and practices of Jainism in innovative manner.





JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day proceeding of workshop

On

“Intellectual Property Right (IPR)

Held on 3 February 2016 organized at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

Date :- 3 February 2016

Event :- One day seminar on intellectual property right (IPR)

Dignitaries:- Prof. Naresh Dadhich

Event Co-ordinators:- Dr. Jugal Kishore Dadhich

Venue: - Seminar Hall

Purpose / Objective: - To understand the laws and rules to file a patent and copyright.

Remarks: - Faculties were enlightened to be aware about the procedure to file a patent or copyright.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. Sr. P.A. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC

अहिंसा एवं शान्ति विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

जै.वि.भा.सं./अहिंसा/2016/ 324

दिनांक 08.02.2016

सूचना

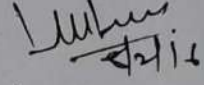
विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शान्ति विभाग द्वारा एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

दिनांक : 09.02.2016

समय : प्रातः 11:00 बजे

स्थान : सेमीनार हॉल, शैक्षणिक खण्ड

इस कार्यक्रम में आप सभी सादर आमंत्रित है।



(प्रो. अनिल धर)
विभागाध्यक्ष

प्रतिलिपि :

1. व.नि.स. - कुलपति
2. नि.स. - कुलसचिव
3. वित्ताधिकारी

जैन विश्वभारती संस्थान

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम १९५६ की धारा ३ के
अन्तर्गत घोषित मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान), भारत



Jain Vishva Bharati Institute

(Declared as Deemed-to-be University under Section 3 of the
UGC Act, 1956)

LADNUN-341306 (Rajasthan), INDIA

'A' Grade by NAAC & 'A' Category by MHRD

जैविभासं/अशांवि/2016/

दिनांक: 08.02.2016

युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर

प्रतिष्ठा में,

प्राचार्य

श्रीलाड मनोहर बाल निकेतन सिनीयर सैकण्डरी स्कूल,
लाडनूँ-341306 (राजस्थान)

महोदय,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा दिनांक 09.02.2016 को प्रातः 11.00 से दोपहर 1.30 बजे तक अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में आपके विद्यालय के कक्षा 9वीं व 11वीं के विद्यार्थियों की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

आशा है आप इस कार्यक्रम हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान कर अहिंसा एवं शांति की संस्कृति के विकास में योगभूत बनेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय,

(प्रो. अनिल धर)
विभागाध्यक्ष

Office of the Vice Chancellor
Phone: +91-1581-222116
Fax : +91-1581-223472
Email : prajna108@gmail.com
vc@jvbi.ac.in

Website : www.jvbi.ac.in
EPABX : +91-1581-222110, 224332

Office of the Registrar
Phone: +91-1581-222230
Fax : +91-1581-223472
Email : registrar@jvbi.ac.in
jvbiadnun@gmail.com

शिक्षा विभाग, जैन विश्व मारती संस्थान द्वारा

शोध प्रारूप। मात्रात्मक एवं गुणात्मक विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय परिषद का आयोजन दिनांक एक ~~जून~~ से दो अप्रैल 2016 को आयोजित किया गया। इस राष्ट्रीय परिषद में देश के विभिन्न राज्यों से कुल 122 सदस्यों ने भाग लिया, आयोजन का प्रथम दिवस चार सत्रों में सम्पन्न हुआ, परिषद आयोजन के उद्घाटन सत्र में जैन विश्व मारती संस्थान की कुम्पति-महोदया-समग्री चरित प्रज्ञानी अध्यक्ष के रूप में, प्रो. मधुशेखर पाटील मुख्य अतिथि के रूप में, प्रो. गोपीनाथ शर्मा मुख्य वक्ता के रूप में, प्रो. सुरेन्द्र सहाय-विश्वविद्यालय अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, अध्यक्षीय उद्घोषण में संस्थान की कुम्पति महोदया ने उक्त विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा की, शिक्षा को शोध से अलग नहीं किया जा सकता है शोध-शिक्षा का अनिवार्य संग है तथा शोध की उपयोगिता स्थापित होनी चाहिए, और शोध में शोधार्थियों को अपने विषय से सम्बन्धित मूल-ग्रन्थों का गहनता से अध्ययन व भारतीय दृष्टिकोण पर विश्वास करके शोध-कार्य किया जाना चाहिए, साथ ही शोध की सार्थकता व उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। इसी क्रम में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. ए.पी. शर्मा ने अपने उद्घोषण में कहा की आज का शोधार्थी धलजेंडे ही Ph.D की डिग्री प्राप्त करना चाहता है इस विषय पर चिन्तन करने की आवश्यकता है और शोध इस प्रकार के हो जो वर्तमान समाज की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं का समाधान कर सके। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. गोपीनाथ शर्मा ने कहा कि शोध समाज उपयोगी हो, उन्होंने अहम कहा कि आज के युग में शिक्षा धन प्राप्ति का एकमात्र साधन बनकर न रह जाए, इसलिए हमें वर्तमान एक परिवर्तन के दमान में स्थायी शोधकार्य किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालय अतिथि के रूप में प्रो. सुरेन्द्र सहाय ने अपने उद्घोषण में कहा कि शोधार्थी को शोध करने के साथ शोध में नये नये

विज्ञान के अंदर में उन्होंने कहा कि विज्ञान में शिक पाठ
पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं बल्कि उनके साथ जोर देना व
आध्यात्मिकता का ज्ञान होना आवश्यक है।

परिलंबित आयोग के दिवस-रात्र में
आध्यात्मिकों द्वारा शोध से सम्बन्धित विभिन्न समझौते
शोध-विशेषज्ञों के सामने पुस्तक की-जैसे-विषय के
बाद में ज्ञान होने के बाद भी हम अच्छा परिणाम नहीं
दे पा रहे हैं, शोध के लिए Pilot Study क्यों नहीं
की जाती है, आधा मात्रात्मक-शोध ही क्यों करवाने का
रहें हैं, आकाश के अंतरिक्ष में अधिकारियों द्वारा समझौते
क्यों नहीं किया जाता है, शोध के लिए क्या परिकल्पनाओं
का होना आवश्यक है इन सभी समझौतों पर
प्रो. गोपीबालु शर्मा, प्रो. एम. पापिक, प्रो. सुब्रह्म अहयन
एक प्रो. जी. एम. जेन ने विलंब-रात्र से समाधान
पुस्तक करते हुए कहा कि आज हम नैतिकतावाद
के पीछे दौड़ रहे हैं और पार्याप्तिकरण के कारण
ही आज हम मूलभूतों का अध्ययन न करके इन्टरनेट
से ज्ञान अर्जित करते हैं, साथ ही शोध के लिए भी
Pilot Study करना, आवश्यक किया जाना चाहिए
और वर्तमान समय की विलम्बियों के कारण जो अर्थकारण
चल रहा है उसे सुधाल करना आवश्यक है (और वह
सुधाल हमें स्वयं से ~~करना~~ ^{करना} पार करना चाहिए)
शोध में परिकल्पनाओं का होना भी नहीं होना यह शोध
विषय पर निर्भर करता है और अंत में उन्होंने कहा कि
आकाश के अंतरिक्ष में अधिकारियों के साथ सामंजस्य
स्थापित करना आवश्यक है।

परिवार (आमोचन) के वृत्ति-सत्र में
 जेन विरव वाली सलमान के कुमसचिव, मधोदन, प्रो. अनिमल धाल,
 अंगोली विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवारी, शिक्षा विभाग
 के सहायक प्रोफेसर डा. मनीष मन्जाल, डा. मावागोही प्रधान
 एक डा. विष्णुकुमार उपस्थित रहे। इस सत्र में शोधकार्यों
 के अपने शोध-विषय के बारे में सक्षिप्त रूपसे प्रस्तुत की
 और उन संपर्कों के संदर्भ में प्रो. अनिमल धाल ने
 उन्हें शोध-सम्बन्धित सुझाव दिए।

परिवार (आमोचन) के चतुर्थ-सत्र में
 विशेषज्ञ के रूप में प्रो. एम. सी. शर्मा उपस्थित रहे, उन्होंने
 शोध की गुणात्मकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि
 शोध वर्तमान संदर्भ की प्राणिकता को ध्यान में
 रखकर किया जाना चाहिए, साथ ही शोध में प्रश्नों
 के उत्तर देने का प्रयास ~~करना~~ किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय-परिवार (आमोचन) के द्वितीय दिवस
 2/4/2016 पर परिवार दो सत्रों में सम्पन्न हुआ- प्रथम सत्र में
 प्रो. एम. सी. शर्मा, प्रो. ~~सुरेश नागिकाजी~~, उपस्थित रहे, डा. अनिमल
 धाल, डा. आमाहिद एक डा. अहिती गोकुल-विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित रहे।
 प्रो. एम. सी. शर्मा जी के शोध के प्रकार, व्यापक, प्रयोगात्मक शोध,
 उपकरणों के प्रकार, विश्वनीयता एक वैधता आदि पत्रों पर
 प्रकाश डाला और शोधकार्यों की शोध सम्बन्धी खेरायाओं
 का समाधान किया।

अतिरिक्त
 परिवार के आमोचन के द्वितीय-सत्र में
 विशेषज्ञ के रूप में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. शिरेश वास्मि,
 डा. गिरवाही मन्मथ शर्मा उपस्थित रहे, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी
 के प्रो. शिरेश वास्मिजी ने प्रयोगात्मक शोध में ~~जैसे कहा है~~, पर
 + ~~अतिरिक्त~~ पर अपनी बात रखी, एक पत्र प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी
 ने समीक्षात्मक, ~~आ~~ तुलनात्मक एक दार्शनिक-शोधों के
 शोध-प्रारूप के कि प्रकार का होना चाहिए - ~~अति~~ प्रकाश डाला।



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day seminar

On


“Patents, Start- ups and Entrepreneurship”

A one day seminar on the topic **“ Patents, Start- ups and Entrepreneurship”** was held at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun on 28/7/2016. It was inaugurated by Dr. Anil Dhar, Registrar, JVBI, Ladnun. After inauguration and opening remarks self introduction was given by all participants. Workshop was divided into two session's as under:

First session was chaired by Prof. B.L. Jain. He elucidates the necessary exclusively and competitive advantage to start, build and grow the business. Patents were also considered as important assets by venture capitalists and investors before making investment decisions. So every technology driven start up must ensure that its technologies are properly protected under the patent regime.

And, in the second session, Dr. Manish Bhatnagar leads the program and share his experiences with examples.

In this seminar 50 students were beneficiary from different colleges. Program ended with valedictory function. Dr. Sunita Indoria presented the vote of thanks. The event was grand success.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day proceeding of workshop
On
"Research Ethics"

Held on 9 August 2016 organized at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

Event :-One day seminar on Research Ethics

Dignitaries :- Prof. A.P. Tripathi


Event Co-ordinators:- Dr. Y.S. Khangarot

Venue :- Seminar Hall

Objectives:- To understand and examine specific research activities and projects for their ethical soundness, looking at issues such as the management of risk, protection of confidentiality and the process of informed consent.

The resource persons elucidate the importance of research ethics and the consequences of plagiarism. They also enlightened how to acknowledge the matter if taken from some other sources.

Remarks: - Faculties were make well aware about the main objectives and benefits of research ethics.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun (Raj.) 341306

(Declared as Deemed-to-be University u/s 3 of the UGC Act, 1956)

EDUCATION DEPARTMENT

"Major Educational & Social Problems : Diagnostic & Remedies"

राष्ट्रीय सेमीनार (28-29 अगस्त, 2016)

28.08.2016 को उद्घाटन कार्यक्रम जैन विश्व भारती संस्थान, शिक्षा विभाग में सरस्वती माल्यार्पण से किया गया। प्रो. बी. एल. जैन ने अतिथियों का परिचय करवाया। डॉ. भाबाग्राही प्रधान ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। डॉ. गिरिराज भोजक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सेमीनार के मुख्य अतिथि उद्बोधन में प्रो. श्रीधर वशिष्ठ, निवर्तमान कुलपति, लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में समस्याएं ही समस्याएं हैं, समाधान उतना नहीं है। अगर वर्तमान में अध्यापकों का सम्मान किया जाये तो शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा संरचना का सम्मान स्वयं ही बढ़ जायेगा। परम्पराओं का निर्वाह करने से शिक्षा की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। क्योंकि अध्यापक त्रिदेव के रूप में वर्तमान शिक्षा की समस्याओं को दूर कर सकता है। शिक्षा आजीविका का साधन होने से भी शिक्षा की समस्याएं बढ़ रही हैं। शिक्षा, शील, क्षमा, धैर्य, परहितार्थ, आसक्ति पर आधारित होनी चाहिये क्योंकि उसी के माध्यम से वर्तमान शिक्षा की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि भारतीय शिक्षा को खण्डित करने, समाप्त करने से शिक्षा की समस्याएं बढ़ी हैं, जिनके कारण गुरु परम्परा खण्डित हुई है, शिक्षकों का सम्मान कम हुआ है। आचार्य तुलसी के कथन के माध्यम से स्पष्ट करते हुए कहा कि शिक्षा में आवेश, आवेग कम होने चाहिये, क्योंकि शिक्षा और समाज एक दूसरे के पूरक हैं, इसीलिए सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए शैक्षिक समाधान ढूँढना होगा। वैश्विक सोच के कारण भी शिक्षा में समस्याएं बढ़ी हैं। शिक्षा की समस्याओं का समाधान शरीर और मन को साधने से होता है, न कि तकनीकी संसाधनों से। जो शिक्षा अनुभव से प्राप्त होगी उसी से समाज और शिक्षा की समस्याओं का समाधान होगा।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के अन्तर्गत विभिन्न सत्रों में कई शिक्षाविदों ने पेपर प्रस्तुत किये – शैक्षिक क्रान्ति, लैंगिक असमानता, अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार, शैक्षिक समस्या, पर्यावरण प्रदूषण, समावेशी शिक्षा आदि विषयों पर पत्र वाचन किया गया।

28.08.2016 के प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. विजयलक्ष्मी शर्मा ने उद्बोधन देते हुए कहा कि देश के भावी कर्णधारों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रजातांत्रिक मूल्यपरक शिक्षा आवश्यक है। हमें हमारी भारतीय संस्कृति को अपनाना चाहिये, क्योंकि उसी के माध्यम से व्यक्ति की मानसिकता में बदलाव, लैंगिक असमानता, अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता, भारतीय संस्कृति को प्रदूषण से बचाया जा सकता है।

डॉ. आशुतोष प्रधान ने अपने उद्बोधन में कहा कि अध्यापक अपनी शिक्षा के प्रति आस्था रखें तथा छात्रों के प्रति प्रेम रख कर उन्हें शिक्षा प्रदान करें तथा अध्यापक विद्यार्थियों के साथ घनिष्ठ एवं मित्रवत सम्बन्ध बनायें।

द्वितीय दिवस प्रथम सत्र की अध्यक्षता गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय से प्रो. जे.पी.एन. मिश्रा, ने की उन्होंने कहा कि सामाजिक, शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए लैंगिक असमानता को दूर करने से समाधान होगा। अध्यापक व विद्यार्थी दोनों को अपने अन्दर की अच्छाई व बुराई को समझने से सामाजिक, शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

प्रो.आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में कहा कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के तीन उद्देश्य हैं। लेकिन तीनों उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विडम्बना यह है कि इस युग में शिक्षा का उद्देश्य सीमित रह गया है। हम जो कुछ प्राप्त करना चाहते हैं उसको जीवन में उतारने से समस्या का समाधान स्वतः ही हो जायेगा।

पत्रवाचन के माध्यम से विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान बताते हुए देश के कई राज्यों से आये हुए प्रतिभागियों द्वारा चिन्तन मन्थन किया गया। विभिन्न विषयों पर डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़, डॉ. सुरभि शर्मा, रामपाल सैनी, प्रेमलता, कादम्बिका सिंह, डॉ. आभासिंह, डॉ. भाबाग्राही प्रधान, डॉ. विष्णुकुमार, डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. अदिति गौतम, मुकेश कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, विजय सागर, मौसम पारीक सम्भागी रहे।

28.08.2016 की संध्या में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आयोजन किया गया। जिसका समस्त प्रतिभागियों ने आनन्द उठाया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो.बच्छराज दूगड़ तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कनक दूगड़ उपस्थित रहे।



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One Day proceeding of workshop

On

“ Intellectual Property Right ”

Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun organized one day training program for faculties & students on Research Methodology covering topics of “Intellectual Property Right” on 31/8/2016.

Program started with lightening of lamp with dignitaries and Sarswati Vandana in gracious presence of Chief Guest Vice-Chancellor B.R. Duger, Guest of honor Prof. R.S. Yadav, Prof. A.P. Tripathi , Principal AKKM and all HoD’s of their respective Departments.

The introduction of the workshop was presented by Dr. Yogesh Jain.

Principal Prof. A.P. Tripathi enlightened the participants by emphasizing on objective of conducting one day training program, basic knowledge & importance of Intellectual Property Right.

The workshop was organised into two sessions, in the first session, Prof. Samani Riju Prajna introduced about Patent information system and Intellectual Property Right and motivate participants by sharing some examples of patent filling. she also introduced participants about copyright of research work etc.

The second session was chaired by Dr. Samani Amal Prajna , in her session she guided the participants about purpose of IP rights of academicians, research output and scoring system.

In this workshop 90 students were the beneficiary from different colleges. This program was really motivating & encouraging for participants. In the valedictory function of this function, certificates were distributed to different participants, Dr. Yogesh Jain presented the vote of thanks.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

Proceeding of one day Training Program on IPR Copy Right Filing
Procedure & Awareness of Funding Agencies held on 19/9/2016 at Jain
Vishva Bharti Institute, Ladnun.

VENUE: SEMINAR HALL.

Objective: To have knowledge of the patents system and patent searching and to aware about types of patents like- copyrights, trademarks, and trade secrets. And to have a general understanding of benefits of patents information & how to use it.

Resource Person: Prof. Ashutosh Pradhan

Outcome of the program - In order to proceed for patent an innovation must, among other things, be confidential. If a researcher or student discloses information about his/her innovation before filing a patent application will prove futile for the process.

Conclusion and Remarks: Around 70 faculty members of different college, research scholars, PhD Holders & in house faculty members were benefited by the workshop on patenting procedures. The event was grand success.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC

अहिंसा एवं शान्ति विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनू (राजस्थान)

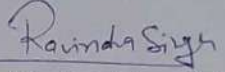
दिनांक : 26.09.2016

सूचना

संस्थान के समस्त विभागाध्यक्षों, शिक्षकों, अधिकारियों, शोधार्थियों एवं विधार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 28.09.2016 को अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसके उद्घाटन सत्र में आप सब की उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

समय – प्रातः 10.30 बजे

स्थान – सेमीनार हॉल (शैक्षणिक खण्ड)



(डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़)
विभागाध्यक्ष, प्रभारी

प्रतिलिपि—

1. समस्त विभागाध्यक्ष, एवं प्राचार्य, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय
2. निजी सचिव, कुलपति
3. निजी सहायक, कुलसचिव
4. शैक्षणिक अधिकारी (प्रभारी)
5. सूचना पट्ट

जैविभासं/अशावि/2016/1868

दिनांक: 26.09.2016

युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर

प्रतिष्ठा में,

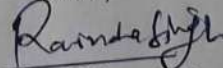
प्राचार्य
मौलाना आजाद सीनीयर सैकण्डरी स्कूल,
लाडनूँ-341306 (राजस्थान)

सम्माननीय महोदय,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा दिनांक 28.09.2016 को प्रातः 10.00 से दोपहर 12.30 बजे तक अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में आपके विद्यालय के कक्षा 9वीं व 11वीं के विद्यार्थियों की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

आशा है आप इस कार्यक्रम हेतु अपनी स्वीकृति प्रदान कर अहिंसा एवं शांति की संस्कृति के विकास में योगभूत बनेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय,

(डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़)
विभागाध्यक्ष/प्रभारी



अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

ISO 9001 : 2008 प्रमाणित संस्था

पंजीकृत कार्यालय : रोहिणी जैन विश्व भारती, लाडनू, जिला - नागौर, राजस्थान - 341306

राष्ट्रीय अध्यक्ष : कल्पना बेद
10 बेलवेडियर रोड, अमरजयोति, फ्लैट-5 डी. ई.
अलीपुर कोलकाता - 700027
फोन : 033-65556005, मोबाइल : 983104645
e-mail : abtmm.kalpana@gmail.com

महामंत्री : सुमन नाहटा
जी-67, सेकंड फ्लोर,
कीर्तिनगर नई दिल्ली - 100015
फोन : 011-43804334, मोबाइल : 098818854120
e-mail : nahata67@gmail.com

दिनांक- 15.11.2016

समणी डॉ. संगीत प्रज्ञाजी,

वंदामि नमंसामि।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित जैन स्कोलर योजना के द्वितीय सत्र की द्वितीय कार्यशाला दिनांक 05.11.2016 से 15.11.2016 तक रोहिणी, जैन विश्व भारती में सानंद संपन्न हुई।

आपश्री के अथक परिश्रम से इस बार जैन विश्व भारतीय संस्थान विश्वविद्यालय (प्राच्य विद्या एवं भाषा विभाग) द्वारा संचालित त्रैमासिक सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम (संस्कृत एवं प्राकृत) भी प्रारंभ किया गया।

आपश्री द्वारा प्रदत्त शिक्षण-प्रशिक्षण एवं अन्य व्यवस्थाओं हेतु प्राप्त सहयोग से ही यह कार्यशाला सुचारु रूप से सानंद संपन्न हुई। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है। आपका इन कार्यशालाओं में प्रारंभ से ही विशेष सहयोग रहा है। भविष्य में भी आपको सतत सहयोग हमें मिलता रहे इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

सधन्यवाद।

कुमुद कच्छारा

कुमुद कच्छारा,
संयोजिका, जैन स्कोलर योजना
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल



Department of Jainology and Comparative Religion

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University),
Ladnun (Rajasthan)

National Workshop on

SHASTRAVARTASAMUCCHAYA

Nov 11-20, 2016

Ten days national workshop on Jain Nyaya based text "Shastravartasamucchaya" was organized from 11 - 30 November 2016 by Dept. of Jainology and Comparative Religion and Philosophy, Ladnun and by the economic courtesy of Indian Council of Educational Research, New Delhi.. In this workshop, 21 participants from various states of the country, and 29 participants from Rajasthan especially from the , Jainolgy Department, Dept. of Oriental Science and Language, Department of Non Violence and Peace , Dept of Yoga and Life Science of Jain Viswabharati Institute have also participated. Participants came from outside were 3 from Maharastra, 2 from Gujarat, 4 from Uttar Pradesh, 2 from Rajasthan (Bharatpur), 1 from Madhya Pradesh. 2. 3. From Sunday From Bagat, the contestant participated. Thus a total of 50 participants participated in this workshop. All the participants were perfect in ten days of study and discussion.

Every morning from 09 to 12, 02 to 04 in the afternoon and 07 to 09 at night through these three sessions, classes and discussion were conducted. The enthusiasm of the participants in all the sessions was appreciated. for teaching the subject. Prof. Dharmachand Jain, from Jayanarayan Vyas University and Prof. Shreyansh Kumar Singhai, from the National Institute of Sanskrit, Jaipur Council, Prof . Veersagar Jain, Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, from New Delhi. Prof. Damodar sastri, from the Department of oriental study and Language of Jain Vishwabharati Institute, Prof. Anand Prakash Tripathi, from the Department of Distance Education and Samani Chaitnaya pragya Public Relations Department and Dr. Yogesh Kumar Jain was supported.



In the inaugural session of the program, the guidelines of the Vice Chancellor of Jain Vishva Bharati Institute, Prof. B. R. Of Duggad sir has given special emphasis making workshop more meaningful. During the discussion session and the reports received from the participants, It was came to know from the teachers, paper presenters and students have a penance for knowing and understanding about JAIN NYAYA but they required a permanent platform and surrounding as such. By courtesy of the Indian Council of Philosophical Research, New Delhi, the Jain Vishva Bharati university as fulfilled. Vishwabharati Institute completed a special subject. The subject specialist of both ICPR and JVBI said that they are grateful since they have gotten the opportunity to study such text in which they can get the co ordinating concepts. Every Jain and other than Jain philosophers have written books about Swamatmandan and Parmatmandan but the way Acharya Harivadra combined the both concepts in "Shastravartasamucchaya" is really commendable.

"Shastravartasamucchaya" is one of the main philosophical text in Sanskrit in JainNyaya. It is the first workshop in this subject to be organized in by this institute .By organizing this workshop, all the teachers and the participants of the department get keen knowledge towards the subject.

This is the request of the Department and Participants from ICPR that this series of workshop should be unstant so that the students can get the oppurtunities to do specialisation in the field of Jain philosophy and other Indian philosophy.



NATIONAL SEMINAR ON

"प्राकृत साहित्य की विभिन्न विधाएं एवं भाषात्मक वैशिष्ट्य"



A National Seminar was organised related to

Prakrit literature on 21-23 Nov, 2016, wherein

Prof. Sushma Singhvi, Jaipur; Prof. Ravindra Kumar

Vasishth, New Delhi and Prof. Binendra Jain, Udaipur

and Vice Chancellor Prof. B.R. Dugar, Prof. Damodar

Shastri, Dr. Samant Sangeet Prajna had shared their

प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग

तथा

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'प्राकृत की विभिन्न
विधाएं एवं भाषात्मक वैशिष्ट्य' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक 21-23 नवम्बर, 2016

प्रतिवेदन

प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के द्वारा प्राकृत साहित्य की विभिन्न विधाएं एवं भाषात्मक वैशिष्ट्य विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 21-23 नवम्बर 2016 तक आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 15 प्रतिभागियों तथा लगभग 15 स्थानीय प्रतिभागियों ने सहभागिता की। यह संगोष्ठी उद्घाटन एवं समापन सत्रों को मिलाकर 7 सत्रों में आयोजित हुई।

उद्घाटन सत्र 21 नवम्बर, 2016 को प्रातः 11 बजे सेमिनार हॉल में आयोजित किया गया। इस सत्र के अध्यक्षता जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने की, मुख्य अतिथि प्रो. सुषमा सिंघवी, जयपुर तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. रविन्द्र कुमार वशिष्ट, नई दिल्ली थे। सारस्वत विद्वान प्रो. दामोदर शास्त्री थे संगोष्ठी में समागत सभी विद्वानों का स्वागत किया एवं संगोष्ठी के उद्देश्यों को विभागाध्यक्ष डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा जी ने बताया। सभी समागत अतिथियों को शॉल, स्मृति चिन्ह तथा साहित्य भेंट कर, स्वागत किया गया कार्यक्रम में मंचस्थ सभी अतिथियों ने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के महत्व को प्रतिपादित करते हुए उसकी अनेक विशेषताओं पर बल दिया। मंगलाचरण मुमुक्षु बहनों ने तथा धनुषवाद ज्ञापन डॉ. समणी भास्कर प्रज्ञा ने किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। द्वितीय सत्र से सत्रों का विवरण निम्न प्रकार से है-

द्वितीय सत्र

दिनांक 21.11.2016, समय- दोपहर 2:00 बजे से सांय 4:30 बजे तक

सत्राध्यक्ष : डॉ. सुदर्शन मिश्र,

संयोजन- डॉ. वन्दना मेहता

1. योगेश जैन- जैन आगम साहित्य : एक परिचय
2. योगेन्द्र मिश्र : प्राकृत भाषा के प्रकार
3. राज किरण : शौरसेनी प्राकृत भाषा का महत्व

4. प्रकाश रेगमी : शौरसेनी प्राकृत साहित्य में शून्यवाद की महत्ता
5. मनोज : जैन ज्योतिष विद्या : एक परिशीलन
6. समणी भास्कर प्रज्ञा : जैनागम में लब्धियाँ

तृतीय सत्र

दिनांक : 22.11.2016, समय—सुबह 9:30 से दोपहर 11:00 तक

1. एकता जैन : प्राकृत आगम साहित्य में वर्णित उपांग ग्रंथों का विश्लेषण एवं महत्व।
2. डॉ. समणी श्रेयस्स प्रज्ञा प्राकृत का उद्भव एवं विकास: जैन आगमों में पुर्नजन्म की अवधारणा।
3. प्रो. सुषमा सिंघवी :
4. डॉ. सुदर्शन मिश्र : मागधी प्राकृत की विभाषाएँ।
5. डॉ. समणी शुभ प्रज्ञा : उपासकदशांग में वर्णित अलंकार।
6. ललिता : भास के नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत भाषा।
7. सत्राध्यक्ष : डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी।
8. संयोजक : समणी भास्कर प्रज्ञा।

चतुर्थ सत्र

दिनांक : 22.11.2016 समय : सुबह 11:15 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक।

सत्राध्यक्ष : डॉ. सुदर्शन मिश्र, संयोजक : मनीषा जैन

पत्र वाचक

1. समणी शशी प्रज्ञा : दशाश्रुत स्कन्ध छेद सूत्र में निदान की अवधारणा।
2. समणी समक्त्व प्रज्ञा : 'आगमों का व्याख्यात्मक साहित्य'
3. डॉ. ऋषभ जैन : 'प्राकृत प्रकाश' ग्रंथ : एक परिचय।
4. डॉ. पुष्पा मिश्र : जैन दर्शन एवं वर्तमान समस्याएँ।
5. शोभा नाई : प्राकृत साहित्य के विभिन्न कथनों का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव।

पंचम सत्र

दिनांक : 22.11.2016 समय : दोपहर 2:00 बजे से सांय 4:00 बजे तक।

सत्राध्यक्ष : डॉ. रविन्द्र कुमार वशिष्ठ, संयोजक : शोभा नाई

1. मुमुक्षु श्वेता : भगवती विमर्श
2. मुमुक्षु रोमक : भाषा विज्ञान एवं प्राकृत भाषा।
3. डॉ. समणी हिम प्रज्ञा जी : उत्तराध्यायन सूत्र में सम्यक्त्व की अवधारणा।
4. मुमुक्षु प्रेक्षा : जैन सूत्रों की प्राकृत अर्द्धमागधी।
5. अरिहंत कुमार जैन : प्राकृत भाषा और विज्ञान
6. डॉ. सुनीता इंदौरिया : प्राकृत भाषाओं में आचार्य हरिभद्र का योग विषयक अवदान।
7. तन्मय जैन : आचार्य जोइन्दु के ग्रंथों में दार्शनिक तथ्य।
8. अध्यात्म प्रकाश जैन : महाबन्धों का वैशिष्ट्य एवं परवर्ती प्रभाव।
9. डॉ. रविन्द्र कुमार वशिष्ठ : अभिलेखीय प्राकृत।

षष्ठम् सत्र

दिनांक : 23.11.2016 समय : सुबह 9:30 बजे से सुबह 11:00 बजे तक।

सत्राध्यक्ष : प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन, संयोजक : डॉ. वन्दना मेहता

पत्र वाचक

1. मनीषा जैन : आचार्य कुन्दकुन्द प्रणीत दस भक्ति एवं उनका स्वरूप
2. समणी विनय प्रज्ञा : जैन आगमों में संख्या का महत्व।
3. अभिषेक चारण : हिन्दी के विकास में प्राकृत का योगदान।
4. जिनेन्द्र जी : प्राकृत साहित्य में मंगल प्रतीक।
5. विकास शर्मा : प्राकृत ग्रंथों में अहिंसा।

अंतिम एवं सप्तम सत्र समापन-सत्र रहा। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. समणी कुसुम प्रज्ञा ने की। मुख्य अतिथि प्रो. जिनेन्द्र जैन, विशिष्ट अतिथि श्री विनोद कुमार कक्कड़, सारस्वत अतिथि प्रो. समणी ऋजु प्रज्ञाजी थे। सभी ने प्राकृत के विकास के लिए एकजुट होकर कार्य करने पर बल दिया। अतिथियों एवं सभी प्रतिभागियों के प्रति विभागाध्यक्ष डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इन सभी सत्रों में प्रतिभागियों के शोध-पत्र प्रस्तुति के पश्चात् अच्छी चर्चाएं हुईं। कई जेज्ञासाएं एवं प्रश्न उपस्थित हुए जिनका समाधान विद्वानों ने उक्ति पूर्वक किया। ये जेज्ञासाएं एवं प्रश्नों के समाधान इस संगोष्ठी की सफलता के ही द्योतक हैं। कई प्रश्न ऐसे भी शेष रहे, जो आगे इस तरह के सेमिनारों के आयोजनों की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं। इस

प्रकार के सेमिनारों का आयोजन नियमित रूप से हमारी संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन में अपनी भूमिका स्थापित करता है।

सहभागियों की आवास व्यवस्था जैन विश्व भारती के भिक्षु निलयम् में तथा विशिष्ट अतिथियों की आवास व्यवस्था संस्थान के अतिथि ग्रह में की गई। भोजन व्यवस्था संस्थान के कैन्टीन में रही। संस्थान की तरफ से हमने सभी विद्वानों एवं प्रतिभागियों की सभी सुविधाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखने का प्रयत्न किया है फिर भी कोई कमी रही हो तो मैं सभी से क्षमा प्रार्थी हूँ।

प्राकृत भाषा एवं साहित्य हमारी संस्कृति को संरक्षित एवं संवर्धित करने वाला है। लेकिन आज हम इन प्राच्यविद्याओं एवं भाषाओं के प्रति उदासीनता दिखा रहे हैं। जिसकी वजह से हम हमारी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं तो ऐसे समय में इस प्रकार की संगोष्ठियों के आयोजन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के प्रति बहुत आभार, जो प्राकृत संस्कृत आदि प्राचीन भाषाओं के संरक्षण के प्रति उदार मन से अपना सहयोग देता रहता है। मैं हमारे संरक्षण के सभी अधिकारियों, कुलपति महोदय, कुलसचिव महोदय, सभी प्राध्यापकगण, नॉन टीचिंग स्टाफ विशेषकर शरद जैन, महावीर जी, कैन्टीन मैनेजमेंट एवं मातृ संस्था के प्रति आभार ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने सुन्दर व्यवस्थाएं उपलब्ध करवाकर इस संगोष्ठी की सफलता में अपना योगदान दिया।



(डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज)

समन्वयक

राष्ट्रीय सेमिनार



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day proceeding of workshop
On
Entrepreneurship & Intellectual Property Rights
Held on 7 January 2017 organized at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

Event :- One day seminar on Entrepreneurship & intellectual property right

Dignitaries :- Prof. S.N. Vyas

Event Co-ordinator:- Ms. Nupur Jain

Venue :- Seminar Hall

Objective :- To understand that how intellectual property right provide benefits to entrepreneurs.

Entrepreneurship and Intellectual property rights are a new discipline and people have been visitant and aware their IPR over these days. Here, emphasis would be given to be aware about IPR.

Remarks: - Faculties were make well aware about IP rights, which provide protection against a competitor directly copying the idea. This help entrepreneur to recover their cost in developing the idea.

IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC

20th February 2017

TO WHOM IT MAY CONCERN

We are pleased to confirm and acknowledge that **Dr. Samani Bhaskar Pragyaji**, Assistant Professor, Dept. of Prakrit & Sanskrit, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun 341 306, Rajasthan visited Dubai from 11th February 2017 to 19th February 2017.

During her stay here, at our request, **Dr. Samani Bhaskar Pragyaji** delivered lectures on "18 Paap - as propounded in Jain Philosophy" from 12th February 2017 to 18th February 2017.

The lectures were well received by the audience at large. Members of our samaj immensely benefited by her in-depth explanations in simple and practical language.

We are indeed grateful to **Dr. Samani Bhaskar Pragyaji** for her valuable contribution to our society.

We wish to convey our respect and Best Wishes for bright future of **Dr. Samani Bhaskar Pragyaji**.

Shri Jain Shwetambar Terapanthi Sabha, Dubai

CKBothra

Chanchal Kumar Bothra
President
20th February 2017

अहिंसा एवं शांति विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

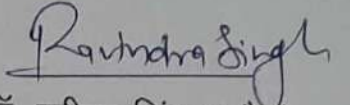
जैविभासं./अहिंसा एवं शांति/2017/०४

दिनांक : 17.02.2017

सूचना

अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा त्रि-दिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 20-22 फरवरी, 2017 तक किया जा रहा है। उद्घाटन सत्र में आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

उद्घाटन सत्र : दिनांक 20.02.2017
समय : प्रातः 10.30 से 11.15
स्थान : सेमीनार हॉल, अकादमिक ब्लॉक


(डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़)
प्रभारी विभागाध्यक्ष

प्रतिलिपि-

1. समस्त विभागाध्यक्ष एवं संकाय सदस्य
2. निजी सचिव, कुलपति
3. निजी सहायक, कुलसचिव
4. सूचना पट्ट



Jain Vishva Bharati Institute

A University dedicated to Oriental Studies & Human Values



जैविभासं./अ.शांति/2017/

दिनांक : 15.02.2017

अहिंसा प्रशिक्षण शिविर फरवरी 20-22, 2017

प्रतिष्ठा में,

प्राचार्य/प्राचार्या,
संस्कृत महाविद्यालय
जसवंतगढ़, जिला-नागौर

सम्माननीय महोदय/महोदया,

आपके सूचनार्थ निवेदन है कि जैन विश्वभारती संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के अंतर्गत दिनांक 20-22 फरवरी, 2017 को युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर अहिंसक व्यक्तित्व विकास, शांति शिक्षा एवं मानवाधिकार को समर्पित होगा।

शिविर में स्नातक एवं स्नातकोत्तर अध्ययनरत विद्यार्थी भाग ले सकेंगे। आपके महाविद्यालय से 5 विद्यार्थी इस युवा शिविर में भाग लें। शिविर में भाग लेने हेतु कोई पंजीयन शुल्क नहीं है। सभी प्रतिभागियों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था हमारे संस्थान द्वारा निःशुल्क की जाएगी। विद्यार्थियों को अपने महाविद्यालय से लाडनूं आने व जाने का बस किराया या द्वितीय श्रेणी का वास्तविक रेल किराया संस्थान की ओर से देय होगा। शिविर के अन्तर्गत संभागियों हेतु वाद-विवाद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता भी आयोजित की जायेगी जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर सफल होने वाले प्रतिभागी को समापन कार्यक्रम में पुरस्कृत किया जायेगा। विद्यार्थी 20 फरवरी को प्रातः 09.00 बजे तक अपनी उपस्थिति अनिवार्य रूप से जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं में दर्ज करवा दें।

वाद-विवाद विषय : "सदन की राय में नोटबंदी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।"

आपसे अनुरोध है कि महाविद्यालयीन छात्रों/छात्राओं को सहभागिता हेतु प्रेरित कर अहिंसा एवं शांति की संस्कृति के विकास और मानवाधिकारों की जागरूकता में योगभूत बनें।

भवदीय,

Ravindra Singh

(डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़)
प्रभारी विभागाध्यक्ष
अहिंसा एवं शांति विभाग





*Department of Jainology and Comparative
Religion and Philosophy*

Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun(341306)

*National Seminar on
"Engaging Jainism with Modern Issues"*

Feb. 24 - 26, 2017

Three-day National Seminar by Department of Jainism and Comparative Therms and Version with a view to highlighting the role of Jainism in addressing the current social, political, religious and global problems and providing appropriate solutions. The seminar was organized with economic courtesy of Indian Council of Philosophical Research, New Delhi. At the inauguration of the program, the Chairman of the Council Prof. S. R. Bhatt himself appeared and clarified the content and importance of the seminar with his thoughts. In this seminar, 115 participants from various institutions, universities, colleges etc. of the country participated.



National Seminar on

"Engaging Jainism with Modern Issues"



As the feedback form of the seminar has revealed, most scholars are reaching the highest peak of their knowledge and coming to this seminar, they are getting new knowledge and through the principles of Jainism, be ready to contribute to the solution of all modern problems. In this seminar, not only focused on academics but scientists, social workers, economic advisors etc., all the students from all walks of life made it successful. In the entire seminar, the research papers has been presented through a total of sixty sessions and four special lectures were also organized. Two sessions were held for open discussion. The seminar souvenir was also released at the inauguration of the program.





अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

ISO 9001 : 2008 प्रमाणित संस्था

पंजीकृत कार्यालय : रोहिणी जैन विश्व भारती, लाडनूँ, जिला - नागौर, राजस्थान - 341306

राष्ट्रीय अध्यक्ष : कल्पना बेद
10 बेलवेडियर रोड, अमरजयोति, फ्लैट-5 डी. ई.
अलीपुर कोलकाता - 700027
फोन : 033-65556005, मोबाइल : 983104645
e-mail : abtmm.kalpana@gmail.com

महामंत्री : सुमन नाहटा
जी-67, सेकंड फ्लोर,
कीर्तिनगर नई दिल्ली - 100015
फोन : 011-43804334, मोबाइल : 098818854120
e-mail : nahata67@gmail.com

दिनांक— 28.03.2017

समणी डॉ. संगीत प्रज्ञाजी,

वंदामि नमंसामि ।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित जैन स्कोलर योजना के तृतीय सत्र की तृतीय कार्यशाला दिनांक 18.03.2017 से 28.03.2017 तक रोहिणी, जैन विश्व भारती में सानंद संपन्न हुई।

आपश्री द्वारा प्रदत्त प्राकृत के शिक्षण-प्रशिक्षण से ही यह कार्यशाला सुचारु रूप से सानंद संपन्न हुई। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है। आपका इन कार्यशालाओं में प्रारंभ से ही विशेष सहयोग रहा है। भविष्य में भी आपका सतत् सहयोग हमें मिलता रहे इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

सधन्यवाद ।

कुमुद कच्छारा

कुमुद कच्छारा,
संयोजिका, जैन स्कोलर योजना
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

Proceedings of one day seminar on

Industry Expert Talk on Career and Opportunities

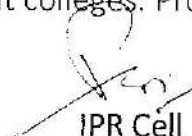
A one day seminar of Industry expert talk on **career and opportunities** was held at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun on 20/7/2017. The seminar was inaugurated by Mr. Vinod Kakkar, Registrar, JVBI, Ladnun. After inauguration and opening remarks self introduction was given by all participants. Workshop was divided into Two session's as under

First session was chaired by Prof. B.L. Jain. In his words, when looking to advance your career to new industry, remember to keep your eyes open for opportunities in your current company, take a step back to reassess your priorities, take the time to prepare your resume. Be proactive, patient and persistent. This will ensure you are ready to act when the right opportunity presents itself.

And in the second session, Dr. P.S. Shekhawat leads the program and shared his experiences with examples. He gives some tips which enables participants to put on the track to sniffing out the next step in the professional life. Patience and persistence, listen and talk, think outside the square, what's important and, be ready to act.

Staying calm and patient, and being alert and prepared, will keep in the best possible position to grab career opportunity.

In this seminar 50 students were beneficiary from different colleges. Program was grand success.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day workshop on "Cyber Security & Ethical Hacking" held on 26 July 2017 organized at Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

Event: One day workshop on Cyber security & Ethical Hacking

Venue: Seminar hall

Objective: To have knowledge of rules and regulations about Cyber security & Hacking System.

Resource Person: Dr. Jasbir Singh

Cyber security and ethical hacking is an upcoming discipline, and over 2-3 years people have become more aware about it. As the cyber-crime has become hazard in this era, hence one should be aware about the consequences regarding the cyber security and ethical hacking.

Remarks: Around 60 members were benefited by the workshop. The event was a grand success.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

Proceedings of the Industry Expert Seminar

on

“Information Security & Management”


Held on 29 July 2017 organized at Jain Vishv Bharti Institute, Ladnun.

Event: Seminar on Information security & Management

Objective: To understand the processes and methodologies involved with keeping information confidential, available, and assuring its integrity.

Resource Person: Ms. Nupur Jain

Conclusion Remarks: Around 50 students were benefited by the seminar. The event was a grand success.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



अहम्
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा
Shree Jain Swetamber Terapanthi Sabha

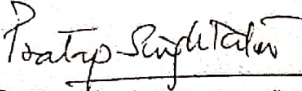
17-Sep-2017

TO WHOM IT MAY CONCERN

DR. Samani Bhaskar Pragyaji
Assistant Professor
Dept. of Prakrit And Sanskrit
Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

Thanks for valuable lectures on "THEORY OF KARMA IN JAIN PHILOSOPHY" AND "LIFE STORY OF LORD MAHAVEER" were organized by jain society at Kathmandu (Nepal) From 15 Aug. to 15 Sep. 2017. Our society is benefited by your wide knowledge.

Again Thanks And Best Wishes for Bright Future


(Pratap Singh Tater)
President



संस्था दर्ता नं.: 827/060/61
सं. क. प. अ. नं.: 39768/071/72

Bhagawan Mahavir Jain Niketan, Kamal Pokhari, P.O. Box No. 13590, Kathmandu, Nepal
Tel: +977-1-4445557, 4422124, WhatsApp - 9863655039, E-mail: sjstsktm@gmail.com



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day proceeding of workshop
On
Internet of Things (IoT)

Held on 16 September 2017 organized at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

Event :- One day seminar on **Internet of Things (IOT)**

Dignitaries :- Prof. S.N. Vyas

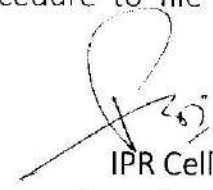
Event Co-ordinator:- Dr. Pragati Bhatnagar

Venue :- Seminar Hall

Objectives :- To understand about IoT operating system, data analysis and the procedure of sending and receiving data.

The resource person elucidates the formalities regarding the neo-technology of Internet of things. The participants were greatly benefitted by the expertise of resource person. There was an open discussion among participants and resource persons.

Remarks: - Faculties were well aware about the procedure to file a patent or copyright. The program ended with a vote of thanks.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

पंजीकृत कार्यालय : "रोहिणी" जैन विश्व भारती, लाडनूं, जिला-नागौर, राजस्थान- 341306 • फोन : 01581-226070

दिनांक- 11.3.2017

डा. समणी संगीतप्रज्ञा जी,

वंदामि नमंसामि ।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित जैन स्कोलर योजना के द्वितीय बैच की चतुर्थ कार्यशाला दिनांक 02.11.2017 से 13.11.2017 तक रोहिणी, जैन विश्व भारती में सानंद संपन्न हुई।

आपश्री ने अथक परिश्रम से प्राकृत जैसा क्लिष्ट विषय बहनों को बड़ी सुगमता से अध्ययन करवाया।

आपश्री द्वारा प्रदत्त शिक्षण-प्रशिक्षण से ही यह कार्यशाला सुचारु रूप से सानंद संपन्न हुई। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है। आपका इन कार्यशालाओं में प्रारंभ से ही विशेष सहयोग रहा है। भविष्य में भी आपका सतत सहयोग हमें मिलता रहे इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

सधन्यवाद।

पुष्पा बैद

संयोजिका, जैन स्कोलर योजना
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल



अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

पंजीकृत कार्यालय : "रोहिणी" जैन विश्व भारती, लाडनूं, जिला-नागौर, राजस्थान- 341306 • फोन : 01581-226070

13.11.2017

समणी भास्करप्रज्ञा जी

वंदामि नमंसामि।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित जैन स्कोलर योजना के द्वितीय बैच की चतुर्थ कार्यशाला दिनांक 02.11.2017 से 13.11.2017 तक रोहिणी, जैन विश्व भारती में सानंद संपन्न हुई।

आपश्री ने अथक परिश्रम से संस्कृत जैसा क्लिष्ट विषय बहनों को बड़ी सुगमता से अध्ययन करवाया।

आपश्री द्वारा प्रदत्त शिक्षण-प्रशिक्षण से ही यह कार्यशाला सुचारु रूप से सानंद संपन्न हुई। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है। आपका इन कार्यशालाओं में प्रारंभ से ही विशेष सहयोग रहा है। भविष्य में भी आपका सतत् सहयोग हमें मिलता रहे इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

सधन्यवाद।

पुष्पा बैद

संयोजिका, जैन स्कोलर योजना
उपाध्यक्ष, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

5 Days Proceedings of FDP
On
**Multidisciplinary Nature of Environment,
Environmental Ethics and Issues**

Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun organized 05 days program for faculties and students on The Topic of Multidisciplinary Nature of Environment, Environmental Ethics and Issues on 7/11/2017 To 11/11/2017.

Program Started with lightening of lamp by dignitaries and sarswati vandana in gracious presence of Chief Guest Vice Chancellor Prof. B.R. Dugar, Guest of Honor and all HoD's and faculty of their respective Departments.

The preface of the workshop was exemplified by Dr. Ravindra Singh Rathore

Dr. Jugal Kishor Dhadich enlightened the participants by emphasizing on objective of conducting FACULTY DEVELOPMENT PROGRAM, and in the continuation of the program he elaborated the nature of the environment, Environment issues and environmental ethics.

The workshop was organized into Four sessions, in the first session, Prof. Anil Dhar introduced about environmental studies which includes the science or physical or biological environment and also cultural and social factors.

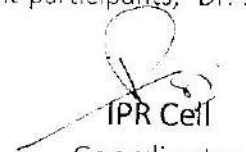
The second session was chaired by Dr. Samni Sulabh Prajna in which she exchanges her words with learners and give them a sound knowledge about how Environmental Studies is a multidisciplinary science, because it depends on various disciplines like chemistry, physics, medical science etc.

The third session was conveyed by Prof. K. S. Bharathi in which he emphasized on the relationship between Environmental studies and their impact on environment.

Fourth Session was presided by Prof. Samani Riju Prajna in which she elucidates on multidisciplinary nature of environmental studies and her approach includes Biology, Geology, Chemistry, Physics, Engineering, Sociology, Health sciences, Anthropology, Economics, Statistics and Philosophy.

In this workshop 80 students and Faculty from different colleges were benefitted.

This program was very preservable for all participants. At last the program ended with Valedictory function, in this function, certificates were distributed to different participants, Dr. Samni Amal Pajna presented the vote of thanks.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC

NATIONAL WORKSHOP ON "MANUSCRIPTOLOGY & PALEOGRAPHY" (25 Nov - 15 Dec, 2017)



Dept. of Prachya Vidya Evam Bhasha (now, Dept. of Prakit and Sanskrit) in co-ordination with Dept. of Jainology organised a 21-day workshop on 'Manuscriptology and Paleography'. Famous scholars and lectures had given lectures on the same and also taught the participants different kinds of scripts. Prof. Naresh Dadich, Kota; Mr. Saikhon Barik, New Delhi; Prof. Vinendra Kumar, Udaipur;

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत
राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के आर्थिक सौजन्य से आयोजित
इक्कीस दिवसीय राष्ट्रीय पाण्डुलिपि विज्ञान एवं लिपिविज्ञान विषयक कार्यशाला

प्रतिवेदन

(Nov. 25 to Dec. 15, 2017)

जैन विश्वभारती संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग एवं प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत संचालित राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के आर्थिक सौजन्य से आयोजित इक्कीस दिवसीय “पाण्डुलिपि विज्ञान एवं लिपिविज्ञान” विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 25 नवम्बर से 15 दिसम्बर 2017 तक किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 25 नवम्बर 2017 को प्रातः 11 बजे संस्थान के आचार्य महाप्रज्ञ-महाश्रमण आडिटोरियम में संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। उद्घाटन सत्र में कोटा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर कार्यक्रम को गरिमामय बनाया। इस अवसर पर राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के प्रोग्राम को-आरडिनेटर डॉ. श्रीधर बारीक, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र जैन एवं संस्थान के वरिष्ठ प्रो. दामोदर शास्त्री ने पाण्डुलिपि विज्ञान एवं लिपिविज्ञान के उद्भव एवं विकास के साथ-साथ पाण्डुलिपि के अध्ययन की वर्तमान स्थिति के साथ पाण्डुलिपि के इतिहास एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला। कार्यशाला निदेशिका प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा जी ने समागत सभी अतिथियों का स्वागत किया। संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने संस्थान का परिचय प्रदान किया तथा समणी संगीतप्रज्ञा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन कार्यशाला समन्वयक डॉ. योगेश कुमार जैन ने किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. नरेश दाधीच जी ने बताया कि आज लगभग 60% बोलियां लुप्त हो चुके हैं तथा शताधिक भाषाओं का अध्ययन एवं पठन-पाठन भी समाप्त हो जाने के कारण अनेकानेक ग्रन्थ जो हस्तप्रद अथवा पाण्डुलिपियों में बद्ध हैं, उनका ज्ञान हमें नहीं हो पा रहा है, अतः पाण्डुलिपियों के अध्ययन, पठन-पाठन एवं शोध की आवश्यकता है। आपने पाण्डुलिपि विषयक कार्यशाला के आयोजन हेतु संस्थान एवं मिशन का आभार ज्ञापित किया।

कार्यशाला में देश के विभिन्न स्थानों यथा राजस्थान, उत्तरप्रदेश, असम, मेघालय, मध्यप्रदेश, गुजरात एवं उत्तराखंड तथा जैन विश्वभारती संस्थान से कुल ६५ प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

- कार्यशाला के प्रथम सत्र में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं जैनागम विभाग के प्रो. जिनेन्द्र जैन ने पाण्डुलिपियों के इतिहास, संपादन एवं अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डाला। आपने जैन विश्वभारती संस्थान में स्थित पाण्डुलिपियों का परिचय भी दिया।
- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन से आये डॉ. श्रीधर बारीक ने काश्मीर की प्राचीन लिपि 'शारदालिपि' के इतिहास से तो परिचय कराया ही साथ ही आपने शारदालिपि की वर्णमाला का प्रशिक्षण भी दिया। आपने तीन दिनों में ही शारदालिपि की वर्णमाला, स्वर, व्यंजन एवं मात्राओं का ज्ञान प्रतिभागियों को दिया तथा प्रतिभागियों ने सफल प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, बनारस से आयी डॉ. मुन्नी पुष्पा जैन ने कार्यशाला में ब्राह्मीलिपि की वर्णमाला का प्रशिक्षण दिया तथा आपने भी चार दिनों के प्रशिक्षण में समागत प्रतिभागियों को ब्राह्मीलिपि का ज्ञान कराया। आपने सम्राट अशोक के शिलालेखों तथा सम्राट खारबेल के उदयगिरि-खण्डगिरि स्थित शिलालेखों को जो कि ब्राह्मीलिपि में हैं उनको पढ़ना सिखाया।
- जैन विश्वभारती संस्थान के प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग के प्रो. दामोदर शास्त्री जी ने पाण्डुलिपि के संपादन एवं अनुवाद में आने वाली कठिनाईयों तथा सावधानियों पर प्रकाश डाला। आपने संस्कृत एवं प्राकृत के साहित्य एवं व्याकरण के अध्ययन पर विशेष बल दिया।

- जैन विश्वभारती संस्थान के प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने पाण्डुलिपियों के रोमन लिप्यान्तर का प्रशिक्षण दिया।
- जैन विश्वभारती संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग की सह आचार्या डॉ. समणी शशीप्रज्ञा जी ने जैन तत्त्वविद्या एवं जैनधर्म के सिद्धान्तों की आधुनिक प्रासंगिकता का प्रशिक्षण दिया।
- जगद्गुरु रामनन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग से आये डॉ. शशीकुमार शर्मा ने समस्त प्रचीन लिपियों में कठिन “ग्रन्थ लिपि” का प्रशिक्षण दिया। ग्रन्थलिपि प्राचीन चित्र लिपि का ही एक रूप है, इसका प्रचलन तमिल, तेलगु भाषी प्रदेश में सातवीं शताब्दी पर्यन्त रहा। आज भी ग्रन्थलिपि की अनेकानेक पाण्डुलिपियां प्राप्त होती है। आधुनिक आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं केरल तथा तेलंगाना की प्राचीन लिपि ग्रन्थ ही थी। आज अंग्रेजी में लिखी जाने वाली कर्सिव राईटिंग के समान ही ग्रन्थलिपि लिखी जाती है।
- राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान अगरतला परिसर से आये डॉ. उत्तमसिंह जी ने ओल्डनागरी भाषा एवं लिपि का प्रशिक्षण दिया। आज सर्वाधिक पाण्डुलिपियां नागरी अथवा पुरानागरी में ही प्राप्त होती हैं। आपने पाण्डुलिपि शब्द का विशेष अर्थ करते हुये हस्तप्रद लिखने की कला का ज्ञान कराया। प्राचीन काल में लिपिकारों को लहिया कहा जाता था तथा लहिया केवल लिपि करने का कार्य ही नहीं करते थे, वे समय-समय पर लेखन कार्य भी करते थे। यही कारण है कि एक ही ग्रन्थ की विविध प्रतियों में कुछ भिन्नता प्राप्त होती है। आपने मूल पाण्डुलिपियों के फोलियों का प्रतिभागियों के समक्ष रखकर उनका अध्यापन कराया। आपने पाण्डुलिपि लेखन सामग्री से परिचय कराते हुये तत्कालीन संस्कृति से परिचय कराया।
- कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से आये डॉ. सुरेन्द्रमोहन मिश्र ने समीक्षात्मक संपादन का इतिहास बताया तथा आधुनिक शोध पद्धति में किस प्रकार के समीक्षात्मक संपादन की आवश्यकता है, इसका परिचय कराया। आपने लेखन की तीनों विधियों- विरलाक्षर, सघनाक्षर एवं पदच्छेद विधि का प्रशिक्षण भी दिया।
- लखनऊ से आये प्रो. के. के. थपलियाल जी ने प्रागैतिहासिक काल, ऐतिहासिककाल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल में ब्राह्मीलिपि के स्वरूप पर प्रकाश डाला। आपने ब्राह्मीलिपि की वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण की बनावट का वैज्ञानिक आधार बताते हुये समागत प्रतिभागियों को इसका प्रशिक्षण दिया।

स प्रकार कार्यशाला में ब्राह्मी, शारदा, ग्रन्थ एवं नागरी लिपि का प्रशिक्षण दिया गया।

समागत प्रतिभागियों ने संस्थान की पाण्डुलिपियों के संरक्षण हेतु तीन दिनों तक प्रिजरवेसन कार्य भी किया। प्रतिभागियों को आर्ट गैलेरी, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, भिक्षु बिहार, छापर, सालासर एवं लाडनूं स्थित एक हजार वर्ष प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर आदि पुरामहत्त्व के स्थानों का भ्रमण भी कराया गया।

दिनांक १४ दिसम्बर को प्रतिभागियों की परीक्षा का आयोजन भी किया गया। तथा सभी प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ सभी कार्यक्रमों में सहभागिता की।

आज दिनांक १५ दिसम्बर २०१७ को इक्कीस दिवसीय राष्ट्रिय कार्यशाला का समापन समारोह जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. बी. आर दूगड़ की अध्यक्षता में एवं लखनऊ के प्रो. के. के. थपलियाल के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हो रहा है।

इस कार्यशाला के आयोजन में राष्ट्रिय पाण्डुलिपि मिशननई दिल्ली का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ, अतः मिशन का विशेष आभार। संस्थान के कुलपति महोदय, कुलसचिव महोदय एवं वित्ताधिकारी महोदय तथा कार्यशाला निदेशक प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, विभागाध्यक्ष, जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग, प्राच्यविद्या एवं भाषा विभाग की विभागाध्यक्ष एवं कार्यशाला के शैक्षणिक समन्वयक डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा एवं डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज जी का तथा डॉ. सुनीता इन्दौरिया, श्री शरद जैन एवं विभाग के सभी विद्यार्थियों का सहयोग विशेष रूप से प्राप्त हुआ। सभी के प्रति आभार एवं कृतज्ञता।

Date: December 15, 2017

Prof. Samani Riju Prajna
Workshop Director

Dr Yogesh Kumar Jain
Programme Coordinator

Dr Sangeet Prajna
Coordinator


Dr Satyanarain Bhafadwaj
Coordinator

Dept. of Jainology and Comparative Religion & Philosophy
Dept. of Prachya Vidya Evam Bhasha
Jain Visvha Bharati Institute, Ladnun-341306 Rajasthan



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day proceeding of workshop
On
Emerging Trends in Information Technology

Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun organized one day training program for faculties & students on Emerging Trends in Information technology on 23/12/2017.

Program started with lightening lamp by dignitaries and sarswati vandana in gracious presence of chief guest Vice Chancellor B.R. Dugar, Guest of honor Prof. B.M. Sharma, Prof. A.P. Tripathi, Principal AKKM and all HoD's and faculty of their respective Departments.

The introduction of the workshop was presented by Dr. P.S. Shekhawat.

Principal Prof. A.P. Tripathi enlightened the participants by emphasizing on objective of conducting one day training program, basic knowledge & importance of emerging trends in Information Technology.

The workshop was organized into two sessions, in the first session, Dr. Amita Jain introduced about Information Technology and their latest trends and implications for developing countries.

The second session was chaired by Ms Archana Singhal, in her session she guided the participants about latest emerging trends of information technology like Cloud Computing, Internet of things (IoT), Big Data, Cyber security, Context-Rich systems, increased automation, continued mobile pervasiveness, web-Scale IT and 3D Printing.

In this workshop 70 students were the beneficiary from different colleges. This program has been very beneficial for everyone and participants has taken actively part in it. At last the program ended with Valedictory Function, in this function, certificates were distributed to different participants, Dr. Abha Singh presented the vote of thanks.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day Proceeding of Workshop

On

“How to Select Topic for Project”

Jain Vishva Barti Institute, Ladnun organized one day training program for faculties and Research Scholars on **How to Select Topic for Project** on 29/12/2017.

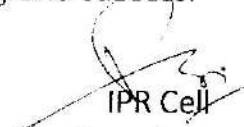
Program started with lightening of lamp by dignitaries and sarswati vandana in gracious presence of Chief Guest Dr. Samani Riju Prajna and all HoD's and faculty of their respective Departments.

The introduction of the workshop was presented by Dr. Giriraj Bhojak.

Principal Prof. A.P. Tripathi Enlightened the participants by emphasizing on objective of conducting one day training program, basic knowledge of selection of topic for project.

The workshop was organized into two sessions, in the first session, Dr. Saroj Rai introduced about selection of topic. In her point of view a research project should be: Possible, Feasible, Interesting and Valuable.

The second session was chaired by Dr. P.S. Shekhawat. In which he convey sound knowledge to learners, instructors who assign writing projects will leave the choice of what to write. So topic should be chosen according to area of interest. In this workshop around 50 Faculty members and research scholars were beneficiary from different colleges. At last the program ended with Valedictory Function, Dr. R.S. Rathore presented the vote of thanks. The event was a grand success.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day proceeding of workshop

On

Innovation and Technology

Held on 19 January 2018 organized at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

Event :- One day seminar on Innovation and Technology

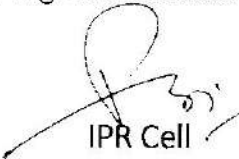
Dignitaries :- Ms. Nupur Jain

Event Co-ordinator :- Dr. Pragati Bhatnagar

Venue :- Seminar Hall

Objective:- Innovative objectives are goals to improve things by an order of magnitude. Innovation typically requires experimentation, risk taking and creativity. Participants easily come to know how new innovation process can be generate. Resource person answers the queries of the participants up to the mark of their satisfaction.

Remarks: - Faculties were made well aware about innovation process and innovation policy. The workshop ended with vote of thanks, and was a great success.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC

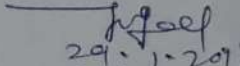
अहिंसा एवं शान्ति विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

दिनांक : 29.01.2018

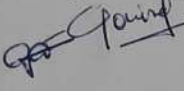
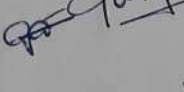


सूचना

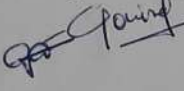
संस्थान के समस्त विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, अधिकारियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि अहिंसा एवं शान्ति विभाग द्वारा त्रि-दिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का समापन दिनांक 29.01.2018 को शैक्षणिक खण्ड के सेमीनार हॉल में दोपहर 02:30 बजे होगा।

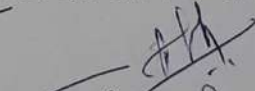
इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के दूरस्थ निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी करेंगे। आप सभी की उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

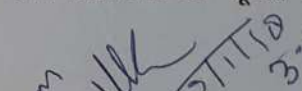

29.01.2018
(जुगल किशोर दाधीच)
विभागाध्यक्ष

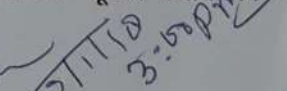
प्रतिलिपि-

1. समस्त विभागाध्यक्ष/प्राचार्य आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय इस आशय के साथ सभी विद्यार्थियों को सूचित कराने का श्रम करावे
2. निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय 
3. सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष 
4. निजी सचिव, कुलपति 
5. निजी सहायक, कुलसचिव 
6. सूचना पट्ट


Jain Ryji P


AKKM
29/1/18
2:45 PM


BLA
29/1/18
2:50 PM


29/1/18
3:50 PM



Jain Vishva Bharati Institute

A University dedicated to Oriental Studies & Human Values

Youth Camp for Training in Nonviolence, Culture of Peace & Human Rights

(January 29-31, 2018)

जैविभावि/अशावि/2018/ ~~7162~~ 7162

दिनांक : जनवरी 1, 2018

प्रतिष्ठा में,

प्राचार्य/प्राचार्या,

महाविद्यालय, राजकोटर
महाविद्यालय, राजकोटर

9414465181

प्रिय महोदय/महोदया,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि अहिंसा, शांति एवं प्राच्य विद्याओं को समर्पित जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय का अहिंसा एवं शांति विभाग जनवरी 29-31, 2018 को त्रि-दिवसीय युवा शिविर का आयोजन करने जा रहा है। यह शिविर अहिंसा प्रशिक्षण, शांति की संस्कृति एवं मानवाधिकार को समर्पित होगा।

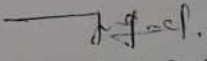
शिविर में स्नातक एवं स्नातकोत्तर अध्ययनरत विद्यार्थी भाग ले सकेंगे। हम चाहते हैं कि आपके महाविद्यालय से 5 विद्यार्थी इस युवा शिविर में अवश्य भाग लें। शिविर में भाग लेने हेतु कोई पंजीयन शुल्क नहीं है। सभी प्रतिभागियों के आवास व तीन दिन की भोजन व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा निःशुल्क की जाएगी। विद्यार्थियों को अपने महाविद्यालय से लाडनू आने व जाने का बस किराया या द्वितीय श्रेणी का वास्तविक रेल भाड़ा विश्वविद्यालय की ओर से देय होगा। प्रतिभागी विद्यार्थी अपने पहनने, ओढ़ने आदि के वस्त्र साथ में लायें तथा जनवरी 29 को प्रातः 10:00 बजे तक अपनी उपस्थिति अनिवार्यतः जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनू में दर्ज करवा दें।

शिविर के अनन्तर ही संभागियों के लिए भाषण एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाएगा। भाषण प्रतियोगिता का विषय है-

"उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के लिये उत्तरदायी कौन- संसाधन/शिक्षक"

आपसे अनुरोध है कि अपनी संस्था से संभावित संभागियों एवं प्रतियोगिता हेतु विद्यार्थियों के नाम 20 जनवरी 2018 तक अवश्य भेजकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें एवं अहिंसा एवं शांति की संस्कृति के विकास में योगभूत बनें।

संधन्यवाद।


1.1.2018

डॉ. जुगल दाधीच
विभागाध्यक्ष





JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

Innovation and its Protection

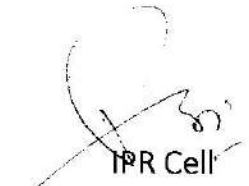
Date: 2 February 2018

Venue: Seminar Hall, JVBI.

Dr. Pushpa Mishra initiated the Innovation and Protection training programme for faculty members and students of Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

The workshop focused primarily on patent counts, patent citations, productivity measurement, valuation of R&D using financial reporting data, the representation of innovation output in the national accounts, and technology adoption surveys. Participants emphasized repeatedly that much of the outcome of innovation accrues to society as spillover effects that present considerable measurement challenges. Discussion on limitations was also exchanged by expert with participants.

Program ended with Valedictory function. Dr. Balbeer Singh presented the vote of thanks.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



Jain Vishva Bharat Institute
(Deemed-to-be University u/s 3 of the UGC Act, 1956)
Ladnun - 341306

Report of the Workshop

The inaugural session of the 3-days' National Workshop in the Department of Education on '**ICT Integration in Education and Learning**' was started on February 10, 2018 with the blessings of Goddess Saraswati followed by manglacharan.

Prof. R.S. Yadav from Kurukshetra University, Kurukshetra (Haryana) chaired the session and delivered a visionary speech relating to ICT and its applications. **Prof. Asutosh Pradhan**, Central University, Motihari (Bihar) was the Guest of Honor of the session and he explained the technological ideas and its utility in class-room teaching and learning.

Dr. Mamur Ali of Central Institute of Educational Technology, N.C.E.R.T., New Delhi as a Chief Resource Person of the session delivered his lecture focusing technology and its integration in education.

Prof. B.L. Jain, Head, Department of Education, JVBI, introduced the guests, resource persons and delegates.

Dr. Bhabagrahi Pradhan, Coordinator of the Workshop highlighted the major objectives of the Workshop in present context.

The inaugural session ended with the vote of thanks by Dr. Manish Bhatnagar.

The first technical session started with the remarkable speech with digital demonstration by **Dr. Mamur Ali**.

In the evening, a colourful cultural programme for the guests has been organised by the students of the department.

On second day i.e. February 11, 2018, **Dr. Yashpal Sharma** of Central Institute of Educational Technology, N.C.E.R.T., New Delhi, was the Resource Person. In this session, vigilant discussion was done by him with the participants.

In the parallel session, audio-video contents were also prepared by **Mr. Sudhir Saxena**, Producer & **Mr. Mining**, Cameraman and their team from N.C.E.R.T., New Delhi.

On evening, **Dr. Yashpal Sharma** and his peer team prepared a Question-Answer session for Hon'ble Prime Minister's, Govt. of India.

On third day i.e. February, 12, 2018 the session continued with the Resource Person, named; **Dr. Aerum Khan** and **Dr. Archana** from N.C.E.R.T., New Delhi. Both of the resource persons spread their intellectual speech with interaction to the delegates and participants.

During these sessions, 8 resource persons and 154 participants participated throughout the country mainly; from Rajasthan, Haryana, Odisha, Delhi, U.P., Bihar and Himachal Pradesh.

Prof. Amarendra Behera, Joint Director, N.C.E.R.T., New Delhi plays the vital role for the Workshop as an Advisor.

End of the day, the valedictory session has done with the chair of **Prof. Anand Prakash Tripathi**, J.V.B.I. Dr. Giriraj Bhojak introduced the guests.

Following responsibilities were assigned to the members of the Organizing Committee :

Invitation to the delegates / participants	- Dr. Manish Bhatnagar and Dr. Vishnu Kumar
Food and stay arrangement	- Dr. Giriraj Bhojak
Registration and Certificate distribution	- Dr. Saroj Rai and Ms Mukul Sarswat
Cultural programme preparation	- Dr. Abha Singh
Photo and news	- Dr. Girdhari Lal Sharma
Dias arrangement	- Dr. Amita Jain
Tilak and rangoli	- Dr. Mamta Soni

Dr. Bhabagrahi Pradhan, Coordinator of the workshop has chalked out the report of the Workshop.

Vote of thanks has given by **Prof. B.L. Jain**, Director of the Workshop.

National Seminar On

“Connecting and Engaging Jain Institutions for a Better Tomorrow - II”

Aug. 10, 2019



Organised by Bhagwan Mahavir International Research Center,
Jainology and Comparative Religion and Philosophy

By bringing the Jain educational and research institutes operating all over the country on one platform and in order to share the work being done, a one-day seminar was organized by Jainology department of the institute on August 10, 2019. The seminar was attended by representatives of 30 educational and research institutes from all over the country. The director of the research center, Prof. Samani Rijupragya Ji stated the following objectives of the workshop

- To create a strong networking among the various Jain Research Centers.
- To share the experience and activities of the concerned Centers / Institutes
- To discuss the possibility of any collaboration among us for working together.
- To undertake a research project on Jainism.
- To write a Monograph on prescribed Jain Principles.
- To discuss if there is any chance for mutual help in Promoting Jain Studies.

All the subject matter experts presented their views and suggestions on the above points. Prof. Premsuman Jain Udaipur, Prof. Dharmachandra Jain Jodhpur, Prof. Sushma Singhvi, Prof. Ashok Kumar Jain Varanasi, Prof. Jinendra Kumar Jain Udaipur, Prof. Shriyansh Kumar Jain Jaipur, Prof. Kalpana Jain Delhi etc. made everyone aware of Jainism related activities of their institutions. In the end, everyone decided to exchange mutual ideological and research topics, and for that "Jainism research data bank" should be created in Bhagwan Mahavir International Research Center run by Jain Vishva Bharati Institute and all will send information here about Jainism research at their own level and institution level. With this work, the reiteration in research will be avoided.





JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

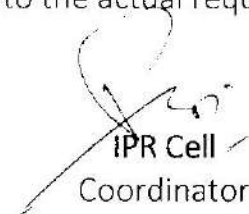
Proceeding on one day workshop on “Software Testing” held on 24 February 2018 organized at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

Objective: to have knowledge of software testing, defined as an activity to check whether the actual results match the expected results and to ensure that the software system is defect free.

Resource Person: Ms. Nupur Jain

Outcome: PRI's teaching activities are patent to generate IP, such as print publications, thesis, software, files, sound recordings, computer presentations and multimedia works. There are generally protected by copyrights.

Concluding Remarks: Around 50 faculty members of different colleges, Research scholar, and in house faculty members were benefited by the workshop and able to identify errors, gaps or missing requirement in contrary to the actual requirement.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC

जैन विश्वभारती संस्थान,
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की
धारा 3 के अन्तर्गत घोषित मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत



Jain Vishva Bharati Institute
(Declared as Deemed-to-be University under
Section 3 of the UGC Act, 1956)
LADNUN - 341 306 (Rajasthan) INDIA

An ISO 9001 : 2008 Certified University & Accredited by NAAC-'A'

JVBI/DU/DDE/2018/411

Dated: 17.04.2018

TO WHOM SOEVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Samani Samyaktva Pragya has taught and trained to M.A. students of Yoga and Science of Living in the contact classes at Pilibanga Centre of Directorate of Distance Education Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun from 1st April, 2018 to 12th April, 2018.

Her performance was quite satisfactory for the students. She bears good conduct and amicable nature.

(Prof. Anand Prakash Tripathi)
Director, DDE

Office of the Vice Chancellor
Phone : +91-1581-222116/226662
Fax : +91-1581-223472
Email : vc@jvbi.ac.in

Website : <http://www.jvbi.ac.in>

Office of the Registrar
Phone: +91-1581-222230
Fax : +91-1581-223472
Email : registrar@jvbi.ac.in
jvbiadnun@gmail.com



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

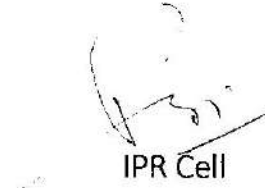
Proceeding on One day workshop on "Cyber security & Cyber law, Hacking System" held on 3 may 2018 organized at Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

Objective: To have knowledge of rules and regulations about Cyber security & Cyber law and Hacking System.

Resource Person: Dr. Jasbir Singh

The experts of the workshop elucidated the fact and factor related cyber security, cyber law and hacking system.

Concluding Remarks: Around 60 members were benefited by the workshop. The event was a grand success.


IPR Cell
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC



जय भिक्षु

अहंम्

जय महाश्रमण

संस्था रजि नं. 2/बाड़मेर/85-86

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा

क्र.सं.

22.05.2018

दिनांक

प्रमाण-पत्र

डॉ. समणी भास्कर प्रज्ञा
सहायक आचार्य, संस्कृत-प्राकृत विभाग,
जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

हमारे निमंत्रण पर आपने बालोतरा में संचालित दूरस्थ संपर्क कक्षाओं के अन्तर्गत **B.A.** द्वितीय वर्ष, **M.A./M.Sc.** जीवन विज्ञान पूर्वाद्ध एवं उत्तराद्ध के विद्यार्थियों को **8 मई से 22 मई** तक सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। हमारे विद्यार्थी आपके प्रभावी अध्यापन कार्य से लाभान्वित हुए। हम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

हे प्रभो ! यह तेरापंथ

प्रेषक

महेन्द्र कुमार वैद

(मंत्री)

तेरापंथ सभा, बालोतरा

अध्यक्ष :
अरविन्द भण्डारी
9413521069

निवर्तमान अध्यक्ष :
मांगीलाल सालेचा
9799403123

उपाध्यक्ष :
पृथ्वीराज गोलेच्छा
9414384354

हीरालाल बाफना
9413525556

मंत्री :
महेन्द्रकुमार वैद
9414270932
mkvaid.vaid@gmail.com

सहमंत्री :
देवीलाल ओस्तवाल
9414270914

कोषाध्यक्ष :
नथमल बाफना
9214472344

संगठन मंत्री :
मोहनलाल बाफना
9414270971





तेरापंथ युवक परिषद्-घाटकोपर



मनु मार्केट, तेरापंथ सभा भवन, दुसरा माला, एम.जी.रोड, घाटकोपर (प.), मुंबई - 400 086.

फोन : 022 - 2509 9219

कार्यकारणी

अध्यक्ष

लोकेश डांगी

9820460779

मंत्री

राकेश बडाला

9892413976

उपाध्यक्ष I

कमल कोठारी

9869275902

उपाध्यक्ष II

विमल बडाला

8976777444

सहमंत्री I

धनराज डांगी

9819244202

सहमंत्री II

राजेश धाकड़

7977132391

कोषाध्यक्ष

जीतेश धाकड़

9869994238

संगठन मंत्री

दिपेश सिसोदिया

9821726497

Date : 25.09.2018

Dr. Samani Bhaskar Pragyaji,
Assistant Prof. Department of
Prachya Vidya Evam Bhasha
JVBI (Deemed University)
Ladnun, Rajasthan

Thanks for valuable lectures on "Theory of Karma in Jainism" and "Life history of Lord Rishabh and his Tradition" were organized by Terapanth Yuvak Parishad Ghatkopar, Mumbai Maharashtra from 25th July 2018 to 25th September 2018. Our society is benefited by your wide knowledge.

Again thanks and Best wishes for Bright Future.

Secretary

Ramesh K. Gulule

TYP Ghatkopar, Mumbai



JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

(DECLARED DEEMED-TO-BE UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF THE UGC ACT, 1956)

LADNUN, RAJASTHAN

One day Training Program on "Ethics in Profession" held on
12/8/2018 at Jain Vishva Bharti Institute, Ladnun.

VENUE: SEMINAR HALL.


Objective: To have knowledge of Professional ethics and to know about personal and corporate rules that govern behavior within the context of a particular profession.

Resource Person: Prof. K.N. Vyas

A person requires to be professional regarding his duties and services. Personal beliefs and relation should be avoided at work place. Professional ethics is mandatory for professional, which includes their work related to the work place.

Concluding Remarks: Around 55 faculty members of different colleges, research scholars, Ph.D. Holders & in house Faculty members were benefited by the workshop on Professional ethics. The event was grand success.

Total No of Participants: 55


IPR Cell 12/08/2018
Coordinator

Copy to:-

1. P.S. to V.C.
2. P.A. to Registrar
3. Director, IQAC

Jain Social Group - Indonesia

Reg. No. : 1/F. 2 / 31. 71. 01. 1003 / - 1.848 / 2017



Respected

samani Samyaktva Pragya Ji

Ladnun, Rajasthan 341306, India

Jain Social Group - Indonesia take pride to convey our sincere regards and heartily appreciate you for your thought provoking discourse on Jainism during your visit to Jakarta - Indonesia on the occasion of Paryushan & DasLakshan Mahaparv (31 Aug. to 20 Sept. 2018).

We truly appreciate the various religious programs (discourse on Jainism in evening and in afternoon, Navkar Mantra Jaap & Presha Dhyan in morning, pratikraman etc.) by you for all ages on daily basis from early morning to evening for the maximum benefits to Jain samaj in Indonesia.

Your inspiring teachings have greatly helped us to clarify our doubts and brought the noticeable positive changes. We have been extremely touched by your words of wisdom and kindness.

We sincerely acknowledge the time you gave after the session, clearing our doubts and teaching / explaining the SHRAVAK DHARM and following the religious path how one can lead a healthy and peaceful life. We thank you for your divine benediction.

With kind regards,

On behalf of JAIN SOCIAL GROUP - INDONESIA



Vimal Kumar Jain

President - Jain Social Group, Indonesia

HP : +62 81210 85403

Jl. Alaydrus No. 56A, Kel. Petojo Utara, Kec. Gambir, Jakarta Pusat - 10130, Indonesia
Phone : +62 21 776 1770 E- mail : info@jsgindonesia.org



श्री जैन श्वेताम्बर तरापंथी सभा

अणुव्रत चौक, असाड़ा 344 022 (राज.)

दिनांक 15-9-18

बन्दामि नमंशामि (डॉ. समीत संगीत प्रजा जी)
आपने मेहती कृपा करवा के हमारे असाड़ा में पर्युषण
पर्व 3-9-18 से 15-9-18 तक हमारे यहाँ पधार
के मेहती कृपा करवाई और हमें धर्मशिक्षण देके
हमारे यहा साधु - साध्वियाँ की कमी पूरी कर दी।
आपने तीनों समय व्याख्यान दिया, हमें आज्ञा स्वाध्याय
करवाया और सधन तत्व की सूक्ष्मता का ज्ञान करवाया
तथा उसे सरलता से समझाया।

हम सभी असाड़ा वासी आपकी कृतज्ञ हैं और सदा
रहेंगे। आप हमारे ऊपर यूँ ही दृष्टि बनाये रखना।

हरकचन्द जैन

अध्यक्ष

9460042401

राणमल जैन

राणमल एस. भंसाली
मंत्री

9414285434

Report of the Symposium

The inaugural session of the 2-days' National Symposium in the Department of Education on 'Teaching Style' was started on September 23, 2018 with the blessings of Goddess Saraswati followed by manglacharan.

Two days' National Symposium was started at 11.00 a.m. on 23rd September, 2018 with the holy prayer of Goddess Sraswati. The inaugural session was started by the Organising Committee of Department of Education with the Chairmanship of **Shri Vinod Kumar Kakkar**, Registrar, J.V.B.I., Ladnun. In this occasion, Prof. T.C. Gyanani from Dayalbag Institute, Agra as the Chief Guest and **Prof. Gopinath Sharma** and **Prof. Santosh Mittal** from Rashtriya Sanskrit Sansthan, Jaipur honored as the Guest of Honour of this programme. **Prof. B.L. Jain**, Coordinator of the programme has introduced all dignitaries and guests. The objectives of the symposium were highlighted by **Dr. Manish Bhatnagar**, the faculty of the department.

In this session, Prof. T.C. Gyanani had reflected the spectrum of wide knowledge relating to the teaching style. Prof. Gopinath Sharma has focused on the ancient gurukul system and vedic style of teaching which is the need of the hour. **Prof. Santosh Mittal** has elaborated various psychological aspects of teaching style. **Dr. Amita Jain**, faculty of the department has anchoring the stage. **Dr. Bhabagrahi Pradhan** faculty of the department has chalkout the vote of thanks to all dignitaries and participants.

The second post lunch session was start with a colourful rajasthani dance of Priyanka Rathore and Poonam, students of the department.

The second day has continued with the paralled discussion of the participants. In this occasion, **Prof. Damodar Shastri**, **Prof. A.P. Tripathi** and **Prof. Samani Riju Prajna** of the Institute ac the Resource Persons and grace occasion. During the programme all the members of Organising Committee had played the active role for the symposium made it success and fruitful.

Prof. Tripathi had highlighted the philosophical thought of teaching style for the students like Aristotle style of teaching.

More than 125 participants participated in this programme from various states of the country such as, Rajasthan, Odisha, Noida (U.P.), Himachal Pradesh and Haryana.

The valedictory progrmme has organized on 24th September, 2018 with the chair of Prof. Samani Riju Prajna of JVBI and **Prof. Damodar Shastri** and **Shri Vinod Kumar Kakkar** as the Resource Person of this programme.

All the faculties Dr. Saroj Rai, Dr. Giriraj Bhojak, Sh. Devilal Kumawat, Ms Mukul Saraswat and Ms Divya Rathore and Dr. Abha Singh and other members played the vital role in the programme made it success.

All the resource persons used to showcase the hidden talent of iie participants.

Vote of thanks was given by **Prof. B.L. Jain**, Director of the Workshop.



International Conference

on

MAHAVEER VANI : A MODERN PERSPECTIVE

November 25, 2018

THE JAIN PHILOSOPHICAL SOCIETY - NASHIK

AND

BHAGWAN MAHAVEER INTERNATIONAL RESEARCH CENTER

Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun, Rajasthan

WORKSHOP REPORT

Bhagwan Mahaveer International Research Center & Department of Jainology and Comparative Religion & Philosophy of Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun have successfully organized its first international Conference on 'Mahaveer VANI: A Modern Perspective' in collaboration with The Jain Philosophical Society - Nashik (JPSN) on November 25, 2018. The Chief purpose of this conference was conserving, amplifying, protecting and enhancing Jainism. The paramount was fully met out in the course of this event.

The Conference was well organized and presented by a galaxy of dignitaries as eminent speakers who were as follows:

01. Dr. Vikram Kumar Shah, Secretary, JPSN
02. Prof. Dr. G.B. Shah, President, JPSN
03. Shree Ranjan D. Shah, Treasurer, JPSN
04. Dr. Bipin Doshi, Globally known Jain Scholar
05. Dr. Samani Amal Prajna, Assistant Professor, Dept. of Jainology, B.M.I.R.C., JVBI, Ladnun
06. Dr. Sudhir V. Shah, A Senior Neurophysician,
07. Samani Samyaktva Prajna, Assistant Professor, Dept. of Sanskrit & Prakrit, JVBI, Ladnun
08. Dr. Shailesh Mehta, A Senior Ophthalmologist, Baroda
09. Dr. Pratap Sancheti, A Senior Neurologist, Jodhpur
10. Narendra Goliya, Industrialist, Nashik



The inaugural session had a pious start with the president & dignitaries lightning the lamp and invoking the blessings of Goddess Saraswati.

Dr. Vikram Kumar Shah, Secretary of JPSN extended a warm welcome to the delegates presented there and highlighted and the chief purpose of organizing the conference and why it was important to conduct. He further emphasized on struggle in recognition and popularity of Jainism in modern era. He paid sincere gratitude towards Nashik industrialists for their support in organizing conference.



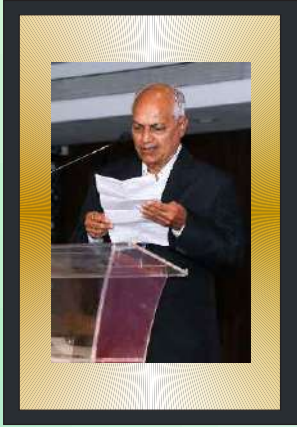
Bipin Doshi, Dr. a globally known Jain Scholar working on 14 institutions from Bombay to U.S.A. laid emphasis on 'Essentials of Jain Philosophy'. He focused on importance and relevance of Jain Principles in today's world and reiterated that by following Jain Principles many problems of the world can be solved. Further he emphasised on the uniqueness of Jain History and highlighted the difference between Dharma and Religion in a very impressive manner.

Narendra Goliya, industrialist who dealt with subject of Non-Violence, elaborated about the different aspects of non-violence and how we follow violence unknowingly. While touching the subtle aspects of Non-violence, he pointed out that not only physical violence is violence but emotional violence is also a form of violence and how we hurt others emotionally by our actions also comes under violence. He further told how we can save ourselves from emotional violence.



Amal Prajna, Samani, Dr. started with documentary and introduced about the place and work of Jain Vishva Bharati Institute. She presented her topic 'Forgiveness in Modern Perspective' and elaborated the holistic concept of forgiveness in different religions, how forgiveness in Jainism is different from other religions, what is its importance, etc. Further she laid emphasis on psychological and empirical studies and showed how important forgiveness is to eradicate anger and concluded with showing the difference between forgiveness and justice.

Dr. Vikram Shah took over the stage and stated the role of Jain Scholars in keeping Jainism alive and spreading in it all over the world.



Key Note Speaker Dr. Sudhir U. Shah, a senior Neuro-physician in Ahmedabad revealed the unknown concepts of science, mathematics, micro-biology etc. existing in Jainism.

After the lunch break, next session started with presentation of Samani Samyaktva Prajna.

She explained the relevance of Non-Violence in our practical life and further proposed that it is not only monks and nuns but even householders can also improve their life.



The Last Speaker of the afternoon session :

Pratap Sancheti, Dr. explained how Preksha Meditation effects fasting and elaborated the scientific aspect of Fasting and how it gives result after meditation.



Afternoon session ended with vote of thanks by Prof. G.B. Shah, President of JPSN and Shree Ranjan D. Shah, Treasurer of JPSN with the call for group pictures and hi tea.





International Workshop on

Jain Way of Life

January 25, 2019

Department of Jainology and Comparative Religion and Philosophy of Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun has successfully organised "One Day International Workshop on Jain Way of Life on January 25, 2019. Chief purpose of this workshop was to throw light on Jain way of life. The workshop was well organized in which 50 delegates from Taiwan participated. The inaugural session started with the welcome speech of Prof. Samani Riju Prajna, Head of the department, Jainology and Comparative Religion & Philosophy, JVBI. Samani Amal Prajna and Dr. Yogesh Jain also extended their warm welcome to the delegates and highlighted the purpose of organizing the workshop. Pochi Huang paid his sincere gratitude towards Jain Vishva Bharati Institute for organizing the workshop.



After the inaugural session, all went to Muni Shri Jaikumarji. Muni Jaikumarji while emphasizing on importance of meditation in our day to day life, practically guided everyone how to meditate.

Dr. Samani Amal Prajna gave a lecture on introduction to Jainism in which she highlighted the three main pillars of Jainism viz. Non-violence, Non-absolutism and Non possessiveness and how they can be practically applied in our life. Prof. Samani Riju Prajna elaborated 12 small vows of a lay man and satisfied various queries of the delegates about Jainism.

Dr. Yogesh Kumar Jain took participants on campus visit. During the visit, he took delegates to JVBI Library, Art Gallery, Acharya Tulsi Samadhi Sthal, Acharya Kalu Kanya Mahavidyalaya etc.

A group photo and interactive session with Prof. B.R. Dugar, Vice-chancellor of Jain Vishva Bharati Institute was also conducted. Workshop ended with vote of thanks by Dr. Samani Amal Prajna.



उद्घाटन • लाडनू में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में दस दिवसीय संस्कृत संभाषण कार्यशाला का हुआ शुभारंभ 10 दिवसीय संभाषण कार्यशाला में बोले वक्ता- संस्कृत मधुर और सरस भाषा, इसकी सरसता को पहचानने की है जरूरत

भास्कर संवाददाता | लाडनू

जैन विश्वभारती संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्वावधान में संस्कृत भारती जोधपुर के सहयोग से दस दिवसीय संस्कृत संभाषण कार्यशाला का उद्घाटन बुधवार को समारोह पूर्वक किया गया। संस्कृत भारती जोधपुर के प्रशिक्षक श्रवणकुमार ने इस अवसर पर कहा कि संस्कृत हमारे रक्त में है, उसे बाहर निकालने की जरूरत है। संस्कृत मधुर एवं सरस भाषा

है, उसकी सरसता को पहचानने की जरूरत है। हम जैसे-जैसे अभ्यास करेंगे, जैसे-वैसे सफ़रता मिलती जायेगी। कार्यक्रम के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि सीखने के लिए वैराग्य और अभ्यास की अपेक्षा होती है। वह अभ्यास दीर्घकाल तक निरंतर एवं समर्पण के साथ करना चाहिए। प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि संस्कृत भाषा से ही भारत देश का गौरव है।

संस्कृत के विद्वान को मिलता है पंडित का पद

समणी नियोजिका मल्लीप्रज्ञा ने कहा कि संस्कृत भाषा के विद्वान को ही पंडित का पद मिलता है। प्राकृत व संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने प्रारंभ में अपने स्वागत-भाषण में संस्कृत भाषा का महत्व बताया तथा कहा कि जैसे छोटा दीपक भी अंधकार को हरता है, वैसे ही यह कार्यशाला संस्कृत भाषा को जीवंत करेगी। कार्यक्रम का प्रारंभ मुख् बहनों



लाडनू. कार्यक्रम के दौरान मंचस्थ अतिथि।

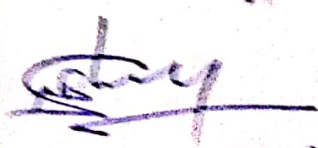
के संस्कृत गीत में प्रस्तुत मंगलचरण से किया गया। कार्यक्रम में समाप्त अतिथियों का शाल्यापण से बहुमान किया गया। अंत में डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापन किया।

कार्यक्रम का संचालन विरुद्ध संस्कृत भाषा में समणी सप्रवृत्तवप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम में अनेक प्राध्यापक, समणीकुंद, मुमुख बहनें, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

10 दिवसीय संस्कृत संभाषण कार्यशाला
16 - 25 जनवरी 2019

प्रतिवेदन

आज्ञात एवं संस्कृत विभाग द्वारा 16-25 जनवरी, 2019
दश दिवसीय संस्कृत संभाषण कार्यशाला का श्रेष्ठ संस्कृत
कार्यी, जोडापुर में सखयोग से किया गया। इस कार्यशाला
में लगभग 100 प्रतिभागियों ने सहभागिता ली। इस कार्यशाला
में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण संस्कृत भारती जोडापुर से
पहचारे थे। कार्यशाला में प्रतिभागियों 2-2 घंटे की दो
घंटों संचालित होती थी। सत्रांत सत्र में मुख्य प्रतिभि
के रूप में संस्कृत भारती के सहायक प्रमुख श्री लीलाचर
शर्मा थे तथा कार्यक्रम की सहायता संस्था के कुलपति
श्री. अरुणराज इंगर ने की। इस समग्र कार्यशाला की
संगोष्ठा को सखयोग संस्था ने की।


(श्री. अरुणराज इंगर)

10 DAY SANSKRIT SAMBHASHAN WORKSHOP

16 – 25 January, 2019

Organized By

Department Of Prakrit and Sanskrit
Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

In collaboration with
Sanskrit Bharati, Jodhpur

Attendance Sheet

S.No.	Name	16 Jan.	17 Jan.	18 Jan.	19 Jan.	20 Jan.	21 Jan.	22 Jan.	23 Jan.	24 Jan.	25 Jan.
1.	Samani Dhriti Pragya	Dhriti	Dhriti	Dhriti	Dhriti	Dhriti	Dhriti	Dhriti	Dhriti	Dhriti	Dhriti
2.	Samani Arhat Pragya	S. Arhat P.	S. Arhat P.	S. Arhat P.	S. Arhat P.	S. Arhat P.					
3.	Samani Manan Pragya	S. Purnap.	Purnapragya	Purnapragya	Purnapragya		Purnapragya	Purnapragya	Purnapragya	Purnapragya	
4.	Samani Sharad Pragya										
5.	Samani Swarna Pragya	Swarna	Swarna	Swarna	Swarna						
6.	Mum. Ankita Choraria Ajeeta										
7.	Mum. Simran	Simran	Simran	Simran	Simran						
8.	Mum. Dixita	Dixita	Dixita	Dixita	Dixita						
9.	Mum. Anupreksha Choraria	Anupreksha									
10.	Mum. Chandan Bala	Chandanbala	Chandanbala	Chandanbala	Chandanbala						
11.	Mum. Diksha Nahata	Diksha	Diksha	Diksha	Diksha						
12.	Mum. Pragya	Pragya	Pragya								
13.	Mum. Aayushi		Aayushi	Aayushi	Aayushi	Aayushi					Pragya
14.	Mum. Deepti	Deepti	Deepti	Deepti	Deepti	Deepti					
15.	Mum. Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha
16.	Mum. Shruti Jain	Shruti	Shruti	Shruti	Shruti	Shruti	Shruti	Shruti	Shruti	Shruti	Shruti
17.	Mum. Chetana Bhansali	Chetana	Chetana	Chetana	Chetana	Chetana	Chetana	Chetana	Chetana	Chetana	

Chopra

18.	Mum. Shiksha Balar	Mum shiksha	shiksha	Mum shiksha	Mum shiksha	Mum shiksha	Shiksha	Mum Shiksha	Mum shiksha	Mum shiksha	
19.	Mum. Khushboo	Khush	Khush	Khush	Khush	Khush	Khush	Khush	Khush	Khush	Khush
20.	Mum. Vandana	Vandana	Vandana	Vandana	Vandana	Vandana	Vandana	Vandana	Vandana	Vandana	Vandana
21.	Mum. Karishma	Karishma	Karishma	Karishma	Karishma	Karishma	Karishma	Karishma	Karishma	Karishma	Karishma
22.	Mum. Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja
23.	Mum. Sanjana	Sanjana	Sanjana	Sanjana	Sanjana	Sanjana	Sanjana	Sanjana	Sanjana	Sanjana	Sanjana
24.	Mum. Preksha Sancheti	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha
25.	Mum. Roshni Lunia	Roshni	Roshni	Roshni	Roshni	Roshni	Roshni	Roshni	Roshni	Roshni	Roshni
26.	Mum. Pooja Bured	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja
27.	Mum. Ronak	Ronak	Ronak	Ronak	Ronak	Ronak	Ronak	Ronak	Ronak	Ronak	Ronak
28.	Mum. Sarika Surana	Sarika	Sarika	Sarika	Sarika	Sarika	Sarika	Sarika	Sarika	Sarika	Sarika
29.	Mum. Nekta	Nekta	Nekta	Nekta	Nekta	Nekta	Nekta	Nekta	Nekta	Nekta	Nekta
30.	Mum. Madhunita Anchia	Madhunita	Madhunita	Madhunita	Madhunita	Madhunita	Madhunita	Madhunita	Madhunita	Madhunita	Madhunita
31.	Mum. Preksha K.	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha	Preksha
32.	Mum. Ajeeta	Ajeeta	Ajeeta	Ajeeta	Ajeeta	Ajeeta	Ajeeta	Ajeeta	Ajeeta	Ajeeta	Ajeeta
33.	Mum. Minal	Minal	Minal	Minal	Minal	Minal	Minal	Minal	Minal	Minal	Minal
34.	Samani Ganbheer Prajna	Ganbheer	Ganbheer	Ganbheer	Ganbheer	Ganbheer	Ganbheer	Ganbheer	Ganbheer	Ganbheer	Ganbheer
35.	Samani Him Prajna	Him	Him	Him	Him	Him	Him	Him	Him	Him	Him
36.	Samani Ojasvi Prajna	Ojasvi	Ojasvi	Ojasvi	Ojasvi	Ojasvi	Ojasvi	Ojasvi	Ojasvi	Ojasvi	Ojasvi
37.	Dr. Bijendr Pradhan	Bijendr	Bijendr	Bijendr	Bijendr	Bijendr	Bijendr	Bijendr	Bijendr	Bijendr	Bijendr
38.	Sh. Ankit Sharma	Ankit	Ankit	Ankit	Ankit	Ankit	Ankit	Ankit	Ankit	Ankit	Ankit
39.	Sh. Manish L. Vora	Manish	Manish	Manish	Manish	Manish	Manish	Manish	Manish	Manish	Manish
40.	Shubham Kishore Sawalkar	Sawalkar	Sawalkar	Sawalkar	Sawalkar	Sawalkar	Sawalkar	Sawalkar	Sawalkar	Sawalkar	Sawalkar
41.	Paras Jain	Paras	Paras	Paras	Paras	Paras	Paras	Paras	Paras	Paras	Paras
42.	Sagar Jain	Sagar	Sagar	Sagar	Sagar	Sagar	Sagar	Sagar	Sagar	Sagar	Sagar
43.	Prashant Jain	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant
44.	Prashuk Jain	Prashuk	Prashuk	Prashuk	Prashuk	Prashuk	Prashuk	Prashuk	Prashuk	Prashuk	Prashuk
45.	Vipul Jain	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul
46.	Monika Sethia	Monika	Monika	Monika	Monika	Monika	Monika	Monika	Monika	Monika	Monika

Mum Anchal

Anchal Anchal Anchal

	Meevakshi Maru	मीवाकशी मारु	मीवाकशी मारु	मीवाकशी मारु	मीवाकशी मारु	मीवाकशी मारु	मीवाकशी मारु	मीवाकशी मारु	मीवाकशी मारु	मीवाकशी मारु
48.	Noemie M. Vora Delagrangre	Meenakshi	Meenakshi	Meenakshi	Meenakshi	Meenakshi	Meenakshi	Meenakshi	Meenakshi	Meenakshi
49.	Mum. Riya Baid	Riya	Riya	Riya	Riya	Riya	Riya	Riya	Riya	Riya
50.	Jyoti Punyan	Jyoti	Jyoti	Jyoti	Jyoti	Jyoti	Jyoti	Jyoti	Jyoti	Jyoti
51.	Bhawana Charan	भावना चारण	भावना चारण	भावना चारण	भावना चारण	भावना चारण	भावना चारण	भावना चारण	भावना चारण	भावना चारण
52.	Amisha Pooniya	अमीषा पुणेया	अमीषा पुणेया	अमीषा पुणेया	अमीषा पुणेया	अमीषा पुणेया	अमीषा पुणेया	अमीषा पुणेया	अमीषा पुणेया	अमीषा पुणेया
53.	Dr. Shobha Verma	डॉ. शोभा वर्मा	डॉ. शोभा वर्मा	डॉ. शोभा वर्मा	डॉ. शोभा वर्मा	डॉ. शोभा वर्मा	डॉ. शोभा वर्मा	डॉ. शोभा वर्मा	डॉ. शोभा वर्मा	डॉ. शोभा वर्मा
54.	Mariya Saini	Mariya	Mariya	Mariya	Mariya	Mariya	Mariya	Mariya	Mariya	Mariya
55.	Suman Choudhary	Suman	Suman	Suman	Suman	Suman	Suman	Suman	Suman	Suman
56.	Puja Charan	पूजा चारण	पूजा चारण	पूजा चारण	पूजा चारण	पूजा चारण	पूजा चारण	पूजा चारण	पूजा चारण	पूजा चारण
57.	Radhana Nal	रचना नाल	रचना नाल	रचना नाल	रचना नाल	रचना नाल	रचना नाल	रचना नाल	रचना नाल	रचना नाल
58.	Rushpa hehra	रुष्पा हेहरा	रुष्पा हेहरा	रुष्पा हेहरा	रुष्पा हेहरा	रुष्पा हेहरा	रुष्पा हेहरा	रुष्पा हेहरा	रुष्पा हेहरा	रुष्पा हेहरा
59.	Shweta Rohlan	श्वेता रोहलन	श्वेता रोहलन	श्वेता रोहलन	श्वेता रोहलन	श्वेता रोहलन	श्वेता रोहलन	श्वेता रोहलन	श्वेता रोहलन	श्वेता रोहलन
60.	Tagee	तगे	तगे	तगे	तगे	तगे	तगे	तगे	तगे	तगे
61.	Karita Bhargav	Karita	Karita	Karita	Karita	Karita	Karita	Karita	Karita	Karita
62.	Harkhu BenLwal	Harkhu	Harkhu	Harkhu	Harkhu	Harkhu	Harkhu	Harkhu	Harkhu	Harkhu
63.	KHUSHABOO	Khushaboo	Khushaboo	Khushaboo	Khushaboo	Khushaboo	Khushaboo	Khushaboo	Khushaboo	Khushaboo
64.	Prashant Jain	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant	Prashant
65.	Sangya Jain	Sangya	Sangya	Sangya	Sangya	Sangya	Sangya	Sangya	Sangya	Sangya
66.	Shubham Sawalkar	S.R. Sawalkar	S.R. Sawalkar	S.R. Sawalkar	S.R. Sawalkar	S.R. Sawalkar	S.R. Sawalkar	S.R. Sawalkar	S.R. Sawalkar	S.R. Sawalkar
67.	Vipul JAIN	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul	Vipul
68.	Dr. S.N. Bharskwar	S.N. Bharskwar	S.N. Bharskwar	S.N. Bharskwar	S.N. Bharskwar	S.N. Bharskwar	S.N. Bharskwar	S.N. Bharskwar	S.N. Bharskwar	S.N. Bharskwar
69.	Divya Bhati	Divya	Divya	Divya	Divya	Divya	Divya	Divya	Divya	Divya
70.	Nagina Bano	Nagina Bano	Nagina Bano	Nagina Bano	Nagina Bano	Nagina Bano	Nagina Bano	Nagina Bano	Nagina Bano	Nagina Bano
71.	Soniya	Soniya	Soniya	Soniya	Soniya	Soniya	Soniya	Soniya	Soniya	Soniya
72.	Chhele Kamwar	Chhele	Chhele	Chhele	Chhele	Chhele	Chhele	Chhele	Chhele	Chhele
73.	Rekha Jangid	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha	Rekha
74.	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja
75.										

76.	मन्जू देवी	मन्जू देवी	मन्जू देवी	मन्जू देवी	मन्जू देवी	मन्जू देवी	मन्जू देवी	मन्जू देवी	मन्जू देवी	मन्जू देवी
77.	रिंकी	Rinky	Rinky	Rinky	Rinky	Rinky	Rinky	Rinky	Rinky	Rinky
78.	नील मुरानतिया	Neely	Neely	Neely	Neely	Neely	Neely	Neely	Neely	Neely
79.	वाडू विश्वास	वाडू विश्वास	वाडू विश्वास	वाडू विश्वास	वाडू विश्वास	वाडू विश्वास	वाडू विश्वास	वाडू विश्वास	वाडू विश्वास	वाडू विश्वास
80.	माया देवी	माया देवी	माया देवी	माया देवी	माया देवी	माया देवी	माया देवी	माया देवी	माया देवी	माया देवी
81.	पुनम पलसानया	Panam	Panam	Panam	Panam	Panam	Panam	Panam	Panam	Panam
82.	गीता कुमारी	गीता कुमारी	गीता कुमारी	गीता कुमारी	गीता कुमारी	गीता कुमारी	गीता कुमारी	गीता कुमारी	गीता कुमारी	गीता कुमारी
83.	अनिता	Anita	Anita	Anita	Anita	Anita	Anita	Anita	Anita	Anita
84.	हेमा सिखवाल	Hema	Hema	Hema	Hema	Hema	Hema	Hema	Hema	Hema
85.	सरोज देवी रतावा	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj
86.	Dr. Anand Jain	An	An	An	An	An	An	An	An	An
87.	सरोज भाकर	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj	Saroj
88.	Sarita	Sarita	Sarita	Sarita	Sarita	Sarita	Sarita	Sarita	Sarita	Sarita
89.	Mu. Anushika	An	An	An	An	An	An	An	An	An
90.	Dr. Pushpa Mishra	Push	Push	Push	Push	Push	Push	Push	Push	Push
91.	Miss. Sneha Paroch	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha	Sneha
92.	Priya Mali	Priya	Priya	Priya	Priya	Priya	Priya	Priya	Priya	Priya
93.	Pushpa Bijarniya	Push	Push	Push	Push	Push	Push	Push	Push	Push
94.	Santu Godara	Santu	Santu	Santu	Santu	Santu	Santu	Santu	Santu	Santu
95.	Manisha Anwal	मनीषा	मनीषा	मनीषा					मनीषा	
96.	Anita Ragar	अनिता	अनिता							
97.	Sarita	सरीता	सरीता	सरीता	सरीता	सरीता	सरीता	सरीता	सरीता	सरीता
98.	Lalita Kanwar	Lalita	Lalita							
99.	Pooja D. - Ugarnaray	पूजा	पूजा	पूजा						
100.	Annu Chaudhary	Annu	Annu							
101.	Nisha	Nisha	Nisha	Nisha	Nisha	Nisha	Nisha	Nisha	Nisha	Nisha
102.	Renu Chaudhary	Renu	Renu	Renu	Renu	Renu	Renu	Renu	Renu	Renu
103.	Manish Rajan Chaudhary	Rajan	Rajan	Rajan	Rajan	Rajan	Rajan	Rajan	Rajan	Rajan
104.	Dr. Sita Indarzia	Sita	Sita							

		Vinda	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda
105.	पूजा काधेज	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda	Vinda
106.	पूजा विडियार	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja	Pooja
107.	SOMVIR SANGWAN	SOMVIR	SOMVIR	SOMVIR	SOMVIR	SOMVIR	SOMVIR	SOMVIR	SOMVIR	SOMVIR
108.	अनित कुमलत	ANITA	ANITA	ANITA	ANITA	ANITA	ANITA	ANITA	ANITA	ANITA
109.	Sonika Jain									
110.	Meeena kumari									
111.	Mamisa									
112.	Dr. Manish Jain									
113.	Mu. Anchal									
114.										
115.										
116.										
117.										
118.										
119.	Shobha Nai									
120.										
121.										
122.										
123.										
124.										
125.										
126.										
127.										
128.										
129.										
130.										
131.										
132.										

अहिंसा एवं शान्ति विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

दिनांक : 31.01.2019

सूचना

संस्थान के समस्त विभागाध्यक्षों, शिक्षकों, अधिकारियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 03-05.02.2019 को अहिंसा एवं शान्ति विभाग द्वारा त्रिदिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसके उद्घाटन सत्र में आप सब की उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

समय – प्रातः 10.30 बजे

स्थान – सेमीनार हॉल (शैक्षणिक खण्ड)

—

(जुगल किशोर दाधीच)
विभागाध्यक्ष

प्रतिलिपि—

1. समस्त विभागाध्यक्ष, एवं प्राचार्य, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय
2. निजी सचिव, कुलपति
3. निजी सहायक, कुलसचिव
4. शैक्षणिक अधिकारी (प्रभारी)
5. सूचना पट्ट



Jain Vishva Bharati Institute

A University dedicated to Oriental Studies & Human Values

Youth Camp for Training in Nonviolence, Culture of Peace & Human Rights

(February 03-05, 2019)

जेविभावि/अशांवि/2018/

दिनांक : जनवरी 12, 2019

प्रतिष्ठा में

प्राचार्य/प्राचार्या,

.....

.....

.....

प्रिय महोदय/महोदया,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि अहिंसा, शांति एवं प्राच्य विद्याओं को समर्पित जैन विश्वभारती मान्य विश्वविद्यालय का अहिंसा एवं शांति विभाग फरवरी 03-05, 2019 को त्रि-दिवसीय युवा शिविर का आयोजन करने जा रहा है। यह शिविर अहिंसा प्रशिक्षण, शांति की संस्कृति एवं मानवाधिकार को समर्पित होगा।

शिविर में स्नातक एवं स्नातकोत्तर अध्ययनरत विद्यार्थी भाग ले सकेंगे। हम चाहते हैं कि आपके महाविद्यालय से 5 विद्यार्थी इस युवा शिविर में अवश्य भाग लें। शिविर में भाग लेने हेतु कोई पंजीयन शुल्क नहीं है। सभी प्रतिभागियों के आवास व तीन दिन की भोजन व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा नि:शुल्क की जाएगी। विद्यार्थियों को अपने महाविद्यालय से लाडनू आने व जाने का बस किराया या द्वितीय श्रेणी का वास्तविक रेल भाड़ा विश्वविद्यालय की ओर से देय होगा। प्रतिभागी विद्यार्थी अपने पहनने, ओढ़ने आदि के वस्त्र साथ में लायें तथा फरवरी 03 को प्रातः 10:00 बजे तक अपनी उपस्थिति अनिवार्यतः जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनू में दर्ज करवा दें।

शिविर के अनन्तर ही संभागियों के लिए भाषण एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाएगा। भाषण प्रतियोगिता का विषय है—

आर्थिक आधार पर आरक्षण उचित है?

आपसे अनुरोध है कि अपनी संस्था से संभावित संभागियों एवं प्रतियोगिता हेतु विद्यार्थियों के नाम 24 जनवरी 2019 तक अवश्य भेजकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें एवं अहिंसा एवं शांति की संस्कृति के विकास में योग्य बनें।

सधन्यवाद।

—
12.1.2019

(डॉ. तुंगल किशोर दाधीच)
विभागाध्यक्ष

9414564043





A Report on National Seminar of Different Aspects of Jain Astrology

23-24 February, 2019

National Seminar on “**Different Aspects of Jain Astrology**” was jointly organized by Department of Jainology and Comparative Religion & Philosophy, Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun and Akhil Bhartiya Prachya Jyotish Shodh Sansthan, Jaiupr from **23-24 February, 2019**.

The inaugural session had a pious start with the dignitaries lighting the lamp and invoking the blessings of Maa Saraswati.

This conference was chaired by Prof. Bacharaj Dugar, Vice Chancellor of JVBI. Chief guests of the workshop were Dr. Anil Jain, Delhi, Dr. Narottam Pujari, Salasar, Pt. Paramanand Sharma, President of Akhil Bhartiya Prachya Jyotish Shodh Sansthan and Prof. Samani Riju Prajna. The conference was well organized and attended by more than 150 eminent astrologists from all over India.

Samani Pranav Prajna enchanted Manglacharan in a melodious voice. Head of the Department, Jainology and Comparative Religion and Philosophy, Prof. Samani Riju Prajna welcomed all the distinguished guests and highlighted the aims and objectives of the Seminar. The guests were warmly welcomed with bouquets, shawl, kit and memento.





Prof. B.R. Dugar, Vice Chancellor of Jain Vishva Bharati Institute, Prof. Samani Riju Prajna and Dr. Yogesh Kumar Jain were awarded "**Sujala Award**" by Akhil Bhartiya Prachya Jyotish Shodh Sansthan, Jaipur .

A Book "**Divisional Charts**" written by the special guest, Dr. Anil Jain was inaugurated on the occasion. In his speech, he focused on how we use astrology in our daily life unknowingly.

Dr. Narottam Pujari of Salasar highlighted new fields of Astrology such as mantra chanting etc. Chief Guest Pt. Parmanand Sharma emphasized on new research and the importance of self experience in the field of Astrology. President of Akhil Bhartiya Prachya Jyotish Shodh Sansthan, Pt. Chandra Shekhar Sharma introduced about the Institute. Chairperson of the occasion, Vice Chancellor JVBI, Prof. Bacharaj Dugar told that Astrology connects our past, present and future. There are various aspects of astrology such as palmistry, dream science etc. Its practical usage attracts everyone.

A Free camp was organized for all in which counseling on various aspects of astrology like Numerology, Palmistry, Terrot Cards, Vastu, Graphology etc. was provided for free of cost. Various astrologers from different states of India presented their papers and research work. Dr. Yogesh Jain Assistant Professor, JCPR, JVBI and Ravi Sharma, Jaipur convened the whole programme successfully. At the end vote of thanks was presented by Dr. Ravi Sharma.



अर्हम्



दूरस्थ शिक्षा सम्पर्क केन्द्र, पीलीबंगा-335803 (राज.)

जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत

लाडनू-341306, जिला नागौर (राजस्थान)

विजयचन्द्र दुगड़

क्षेत्रीय समन्वयक

☎ 01508-233254 (R)

94133-77254 (M)

वार्ड नं. 3, मण्डी यार्ड रोड,

पीलीबंगा, जिला हनुमानगढ़

कमलापति जैन

क्षेत्रीय सह-समन्वयक

☎ 01508-233280 (O)

01508-233437 (R)

99280-75444

वार्ड नं.8, नोहरा नं. 32,

पीलीबंगा, जिला हनुमानगढ़

kpjain280@gmail.com

क्रमांक : दू.शि.स.केन्द्र/ '10/

दिनांक.....

डॉ. समी आस्करपुरा

सहायक आचार्य

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनू

विषय: - अनुशांसा प्रमाण पत्र

महोदया,

हमारे निमंत्रण पर आपने पीलीबंगा में संचालित दूरस्थ संपर्क कक्षाओं के अन्तर्गत M.A जीवन विज्ञान पूर्वी एवं उत्तरार्द्ध के विद्यार्थियों को 10 अप्रैल से 19 अप्रैल तक सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया।

हमारे विद्यार्थी आपके उभावी अध्यापक कार्य से लाभान्वित हुए। हम आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

निवेदक

समन्वयक

विजयासिंह दुगड़

निदेशक : आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, जैन विश्व भारती संस्थान

Ph. 01581-226110, M. 94626-58501, WWW. jybi.ac.in

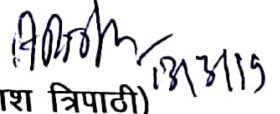
आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

जै.वि.भा.सं./आककम/2019/

दिनांक : 13.03.2019

सूचना

संस्थान के समस्त विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में दिनांक 15.03.2019 प्रातः 10.30 "भारत में कराधान" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इसमें विषय-विशेषज्ञ श्री नितेश माथुर का व्याख्यान होगा। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ करेंगे। आप सभी की उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।


(प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी)
प्राचार्य

प्रतिलिपि : सूचनार्थ

1. समस्त विभागाध्यक्षों को इस आशय के साथ कि विभाग के सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को सूचित कराने का श्रम करावें।
2. निदेशक, शोध
3. निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
4. निजी सचिव-कुलपति
5. निजी सहायक -कुलसचिव
6. सूचनापट्ट



अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

पंजीकृत कार्यालय : "रोहिणी" जैन विश्व भारती, लाडनूं, जिला-नागौर, राजस्थान- 341306

श्री कुमुद कच्छारा

ज्वेलरी, ओफिस नं 6, लक्ष्मी भुवन,
इजी स्लेन, रसिकलाल ज्वैलर्स के सामने,
पी. रोड, घाटकोपर (ई) मुंबई-77
22-25080071/72/73 Mob. : 9833237907
mud.abtmm@gmail.com

महामंत्री

श्रीमती नीलम सेठिया

28/1, शिवाया नगर, 4th क्रॉस,
रेड्डीयुर, सेलम-636004 तमिलनाडु
Mob. : 09952426060
E : neelamsethia@gmail.com

दिनांक-04.04.2019

समणी डॉ. भास्करप्रज्ञा जी

वंदामि नमंसामि ।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित जैन स्कोलर योजना के तृतीय बैच की प्रथम कार्यशाला दिनांक 24.03.2019 से 04.04.2019 तक रोहिणी, जैन विश्व भारती में सानंद संपन्न हुई।

आपश्री ने अथक परिश्रम से संस्कृत जैसा क्लिष्ट विषय भी बहनों को बड़ी सुगमता से अध्ययन करवाया।

आप सबने अपना अनुशासित आचरण एवं धैर्य से इस कार्यक्रम को सफल बनाया। आपका सहयोग एवं बहुमूल्य योगदान अतुलनीय है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है। आपका इन कार्यशालाओं में प्रारंभ से ही विशेष सहयोग रहा है। भविष्य में भी आपका सतत सहयोग हमें मिलता रहेगा इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

सधन्यवाद।

पुष्पा बैद

संयोजिका, जैन स्कोलर योजना



अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

पंजीकृत कार्यालय : "रोहिणी" जैन विश्व भारती, लाडनूं, जिला-नागौर, राजस्थान- 341306

अध्यक्ष

श्रीमती कुमुद कच्छारा

अम्हेर ज्वेलरी, ओफिस नं 6, लक्ष्मी भुवन,
आनन्दजी लेन, रसिकलाल ज्वैलर्स के सामने,
एम. जी. रोड, घाटकोपर (ई) मुंबई-77
Tel : 022-25080071/72/73 Mob. : 9833237907
E : kumud.abtmm@gmail.com

महामंत्री

श्रीमती नीलम सेठिया
28/1, शिवाया नगर, 4th क्रॉस,
रेड्डीयुर, सेलम-636004 तमिलनाडु
Mob. : 09952426060
E : neelamsethia@gmail.com

दिनांक-04.04.2019

समणी डॉ. संगीत प्रज्ञाजी,

वंदामि नमंसामि।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा संचालित जैन स्कोलर योजना के तृतीय बैच की प्रथम कार्यशाला दिनांक 24.03.2019 से 04.04.2019 तक रोहिणी, जैन विश्व भारती में सानंद संपन्न हुई।

आपश्री ने अथक परिश्रम से प्राकृत जैसा क्लिष्ट विषय भी बहनों को बड़ी सुगमता से अध्ययन करवाया।

आप सबने अपना अनुशासित आचरण एवं धैर्य से इस कार्यक्रम को सफल बनाया। आपका सहयोग एवं बहुमूल्य योगदान अतुलनीय है। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला आपके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता है। आपका इन कार्यशालाओं में प्रारंभ से ही विशेष सहयोग रहा है। भविष्य में भी आपका सतत सहयोग हमें मिलता रहेगा इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

सधन्यवाद।

पुष्पा बैद

संयोजिका, जैन स्कोलर योजना